श्रीकमला-कल्पतरु

श्रीमहा-लक्ष्मी-आराधना

पुष्प २

रक्षयामि जगत् सर्वं, पुण्यापुण्ये कृताकृते।
महनीया च सर्वत्र, महा-लक्ष्मीः प्रकीर्तिता।।

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान द्वारा प्रचारित उपयोगी प्रकाशन

अद्‌भुत दुर्गा सप्तशती	१००)	दश महा-विद्या-अष्टोत्तर-शत-नाम	३०)
अलोप-शङ्करी देवी (ललिता-पीठ, प्रयाग)	५)	दश महा-विद्या-कवच	३०)
अघोर-पन्थ का निरूपण	२५)	दश महा-विद्या-गायत्री एवं ध्यान	३०)
अध्यात्म-योग	५)	दश महा-विद्या तन्त्र	६०)
अक्षय-वट	५)	दिव्य योग	६)
अनुभूत साधना	२५)	दीपावली की पूजा-विधि	१५)
आनन्द-लहरी	१२)	दीपावली विशेषाङ्क	४५)
आदि-शङ्कराचार्य अङ्क	१०)	दीक्षा-प्रकाश	३५)
आपदुद्धारक श्रीबटुक-भैरव स्तोत्र	१०)	दुर्गा-साधना	१५)
कमला-कल्पतरु, पुष्प-१, २	८०)	दुर्गा सप्तशती (पद्यानुवाद)	१५)
काली-पूजा-पद्धति	१००)	दुर्गा सप्तशती (विशुद्ध-संस्करण)	२५)
काली-नित्यार्चन	१५)	दुर्गा सप्तशती (बीजात्मक)	१०)
कृष्ण-साधना	२५)	दुर्गा-कल्पतरु (निबन्ध व स्तोत्र-संग्रह)	१५)
काली-कल्पतरु	३००)	दुर्गा-सहस्त्र-नाम-साधना	५)
काश्मीर की वैचारिक परम्परा	१०)	धन-प्राप्ति के प्रयोग	१०)
कुण्डलिनी-साधना	४०)	धर्म-चर्चा	१०)
कुम्भ-पर्व अङ्क	१०)	धर्म-मार्ग पर	३५)
गङ्गा-यमुना-सरस्वती पूजा-अङ्क	५)	ध्यान-योग एवं विचार-योग	५)
गायत्री-कल्पतरु	५०)	नवरात्र-कल्पतरु	१००)
गुरु-तन्त्र (हिन्दी टीका सहित)	१५)	नवरात्र-पूजा-पद्धति (वैदिक)	३)
गुरु-तत्त्व-दर्शन एवं गुरु-साधना	१५)	नवग्रह-साधना (सचित्र)	१००)
चक्र-पूजा	३०)	निष्काम योग एवं कर्म-संन्यास योग	१०)
चक्र-पूजा के स्तोत्र	२५)	पञ्च-मकार तथा भाव-त्रय	२०)
छिन्न-मस्ता नित्यार्चन	२५)	पारायण-विधि	६)
तत्त्व-विवेचन	३)	प्राण-तोषिणी तन्त्र (सर्ग, धर्म-काण्ड)	५०)
तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म-साधना	४५)	बगला-कल्पतरु	१००)
तारा-कल्पतरु	३५)	बगला-साधना	४५)
दकारादि श्री दुर्गा-सहस्त्र-नाम	२०)	बाला-स्तव-मञ्जरी	२५)
दश महा-विद्या-अष्टोत्तर-शत-नामावली	३०)	बाला-कल्पतरु	३५)
		बिहार के देवी-मन्दिर	८)

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६ फोन: ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७

'कौल-कल्पतरु' चण्डी की विशेष प्रस्तुति

वर्ष-६९

श्री कमला-कल्पतरु

पुष्प-२

श्री महा-लक्ष्मी-आराधना

प्रेरणा-स्तम्भ

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

★

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Website : www.paravani.org Email : chandi_dham@rediffmail.com

अनुदान ३५/-

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्री महा-लक्ष्मी-आराधना

देवी श्री महा-लक्ष्मी

देवैः स्तुता जय देव-शक्ति!,
समूह-वपु निर्माणिका।
जय श्री महा-लक्ष्मी-स्वरूप,
धरा महा-गति कर्णिका।।१

श्री महिष-मर्दिनि देवि! जय,
सुर-कष्ट-भञ्जिनि हासिनि!
कर शस्त्र-धारिणि चाष्ट-दश,
वरदा महा-भय-नाशिनि!।।२

गुप्तावतार बाबाश्री

हे दवि! शक्ति अनन्त तव,
गुण-गान सुर को जस कहे।
'मोती' महा-गति अगुण कोटि,
प्रकाश पर कस को कहै।।३

तृतीय संस्करण
फाल्गुन शुक्लाष्टमी, शोभन सं० २०६७ वि०-१३ मार्च, २०११
सर्वाधिकार सुरक्षित
परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनक्रम

आद्यादि महा-लक्ष्मि!,
विष्णु-वामाङ्क-संस्थिते!।
प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं,
रक्ष मां शरणागतम्।।

१९. श्री महा-लक्ष्मी..... ९३
२०. जगत् की माता श्री कमला..... १०३
२१. श्री महा-लक्ष्मी-मन्त्र-साधना..... १०६
२२. माँ लक्ष्मी की प्रधानता..... १०७
२३. श्रीकमला-स्तोत्रम्..... १०९
२४. सर्व-देव-कृतं लक्ष्मी-स्तोत्रम्..... १११
२५. भाग्योदय हेतु श्री महा-लक्ष्मी-साधना..... ११२
२६. श्री महा-लक्ष्मी-कवचम्..... ११३
२७. श्री महा-लक्ष्मी-स्तुति..... ११४
२८. श्री महा-लक्ष्मी-हृदय-स्तवः..... ११५
२९. सिद्धि-लक्ष्मी-स्तुति..... ११६
३०. श्री महा-लक्ष्मी-पद्धति..... ११७
३१. श्री महा-लक्ष्म्यष्टक-स्तवः..... १४३
३२. दरिद्रता-नाशक सूक्त..... १४४

★ ★ ★

प्राक्कथन

सर्व-शक्ति-युक्ता माता महा-लक्ष्मी

सिद्धि-बुद्धि - प्रदे देवि!, भुक्ति - मुक्ति - प्रदायिनि!।
मन्त्र - मूर्ते सदा देवि!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।
आद्यन्त - रहिते देवि!, आदि - शक्ते महेश्वरि!।
योगजे! योग-सम्भूते!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।

अर्थात् भगवती महा-लक्ष्मी पूर्णता, समृद्धि, कल्याण, नितान्त पवित्रता, असीम विशुद्धता, अति मानवीय शक्ति, समस्याओं का पूर्णतया समाधान करनेवाली विलक्षण कुशलता, अनोखी क्षमता, तत्परता, बुद्धि प्रदान करनेवाली हैं। आपकी कृपा से भुक्ति और मुक्ति–दोनों की प्राप्ति होती है। आप साधकों को सदा परामर्श देती रहती हैं। आपका न तो आदि है, न अन्त। आप महेश्वर की आदि शक्ति हैं। आपकी कृपा से ही गम्भीर भाव-चिन्तन होता है अर्थात् मन का सकेन्द्रीकरण होकर परम आत्म-तत्त्व का चिन्तन होता है और चित्त-वृत्तियों का सम्यक् प्रकार से शमन होता है।

आपकी आराधना हेतु 'चण्डी' आध्यात्मिक पुस्तक-माला के द्वारा यहाँ कमला-कल्पतरु, पुष्प-२ का प्रकाशन हो रहा है। आशा है कि महा-लक्ष्मी की आराधना करनेवाले बन्धुओं के लिए यह संग्रह उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत कमला-कल्पतरु, पुष्प-२ में काशी के प्रख्यात तान्त्रिक, ज्योतिषी 'कुल-ज्योति' पं० कन्हैयालाल जी दीक्षित द्वारा प्राप्त दुर्लभ श्री महा-लक्ष्मी-पद्धति का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए हम 'कुल-ज्योति' पं० कन्हैयालाल जी दीक्षित के श्री-चरणों में कोटिशः 'नमो नमः' करते हैं। साथ ही, श्री महा-लक्ष्मी-पद्धति के हिन्दी रूपान्तरण-कर्ता 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त जी शुक्ल को भी हृदय से 'नमो नमः' करते हैं।

फाल्गुन शुक्लाष्टमी, सं०-२०६७ वि०
रविवार, १३ मार्च २०११

–ऋतशील शर्मा
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

★ ★ ★

श्री महा-लक्ष्मी

सच्चिदानन्द-स्वरूपिणी त्रिगुण-मयी 'परा-शक्ति' परमेश्वरी महा-लक्ष्मी ही इस सम्पूर्ण **ब्रह्माण्ड की सृष्टि-स्थिति एवं संहार-क्रम** का आदि कारण और मूलाधार हैं। कहा गया है–

सर्वस्याद्या महा - लक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्य-स्वरूपा सा, व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता।।

अर्थात् **त्रिगुण-मयी परमेश्वरी महा-लक्ष्मी** ही सबका **आदि कारण** हैं। वे ही **दृश्य** और **अदृश्य**-रूप से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं।

परमात्मा की अमर-वाणी विश्व-सभ्यता के सर्व-मान्य प्राचीनतम मानव धर्म-ग्रन्थ '**ऋग्वेद**' के दशम मण्डल के १२५ वें '**देवी-सूक्त**' में इसके प्रमाण हैं। **महर्षि अम्भृण** की ब्रह्म-ज्ञानिनी कन्या '**वाक्**', जिन्होंने **देवी के साथ अभिन्नता** प्राप्त कर ली थी, उनके उद्‌गार देखिए–

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्व-देवैः।
अहं मित्रा-वरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।।

अर्थात् मैं **सच्चिदानन्द-मयी सर्वात्मा** देवी **रुद्र, वसु, आदित्य** तथा **विश्वेदेव-गणों** के रूप में विचरती हूँ। मैं ही **मित्र** और **वरुण** दोनों को, **इन्द्र** और **अग्नि** को तथा दोनों **अश्विनीकुमारों** को धारण करती हूँ।

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्राः भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।

अर्थात् मैं **सम्पूर्ण जगत् की अधीश्वरी**, अपने **उपासकों को धन की प्राप्ति करानेवाली**; साक्षात्कार करने योग्य **परब्रह्म को अपने से अभिन्न-रूप से जाननेवाली** तथा **पूजनीय देवताओं में प्रधान** हूँ। मैं प्रपञ्च-रूप से **अनेक भावों में स्थिर** हूँ। सम्पूर्ण भूतों में मेरा प्रवेश है। अनेक स्थानों में रहनेवाले देवता जहाँ कहीं जो कुछ भी करते हैं, वह सब मेरे लिए करते हैं।

अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन् मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूँ द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि।।

अर्थात् मैं ही इस जगत् के पिता-रूप **आकाश** को सर्वाधिष्ठान-स्वरूप **परमात्मा** के ऊपर उत्पन्न करती हूँ। **समुद्र** (सम्पूर्ण भूतों के उत्पत्ति-स्थान परमात्मा) में तथा **जल** (बुद्धि की व्यापक वृत्तियों) में मेरे **कारण** (**कारण-स्वरूप चैतन्य ब्रह्म**) की स्थिति है; अतएव मैं **समस्त भुवनों** में व्याप्त रहती हूँ तथा **स्वर्ग-लोक** को भी अपने शरीर से स्पर्श करती हूँ।

'आठवीं ऋचा' में स्वेच्छा से कर्म में प्रवृत्त देवी के द्वारा 'विश्व-रचना' के प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिलते हैं। यथा–

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिम्ना सम्बभूव।।

अर्थात् मैं कारण-रूप से जब समस्त विश्व की रचना आरम्भ करती हूँ, तब दूसरों की प्रेरणा के बिना स्वयं ही वायु की भाँति चलती हूँ; स्वेच्छा से ही कर्म में प्रवृत्त होती हूँ। मैं पृथ्वी और आकाश दोनों से परे हूँ। अपनी महिमा से ही मैं ऐसी हुई हूँ।

केवल 'ऋग्वेद' ही क्या, अथर्व-वेदान्तर्गत सु-प्रसिद्ध 'श्रीदेव्यथर्व-शीर्षम्' भी परा-शक्ति महा-लक्ष्मी की महिमा से भरा पड़ा है। देवताओं के द्वारा परा-शक्ति महा-लक्ष्मी से यह पूछने पर कि– 'काऽसि त्वं महा-देवी'–अर्थात् 'हे महा-देवी! तुम कौन हो?'

देवी ने कहा–मैं ब्रह्म-स्वरूप हूँ। मुझसे प्रकृति-पुरुषात्मक सद्-रूप और असद्-रूप जगत् उत्पन्न हुआ है।। १

मैं आनन्द और अनानन्द-रूपा हूँ। मैं विज्ञान और अविज्ञान-रूपा हूँ। अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूँ। पञ्चीकृत और अपञ्चीकृत महा-भूत भी मैं ही हूँ। यह सारा जगत् मैं ही हूँ।।२

वेद और अवेद मैं हूँ। विद्या और अविद्या भी मैं, अजा और अनजा (प्रकृति और उससे भिन्न) भी मैं, नीचे-ऊपर, अगल-बगल भी मैं ही हूँ।।३

मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में सञ्चार करती हूँ। मैं आदित्यों और विश्वेदेवों के रूपों में फिरा करती हूँ। मैं मित्र और वरुण दोनों का, इन्द्र और अग्नि का तथा दोनों अश्विनी-कुमारों का भरण-पोषण करती हूँ।।४

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग को धारण करती हूँ। त्रैलोक्य को आक्रान्त करने के लिए विस्तीर्ण पाद-क्षेप करनेवाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ।।५

उक्त 'श्रीदेव्यथर्व-शीर्षम्' के अन्दर महिमा-मयी 'परा-शक्ति' महा-लक्ष्मी के विषय में मन्त्र-द्रष्टा ऋषि कहते हैं–ये ही अष्ट वसु हैं, ये ही एका-दश रूद्र हैं। ये ही द्वादश आदित्य हैं; ये ही सोम-पान करनेवाले और न करनेवाले विश्वेदेव हैं, ये ही यातुधान, असुर, राक्षस, पिशाच, यक्ष और सिद्ध हैं, ये ही सत्त्व-रज-तम हैं, ये ही ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-रूपिणी हैं, ये ही प्रजापति-इन्द्र-मनु हैं, ये ही ग्रह, नक्षत्र और तारे हैं, ये ही कला-काष्ठादि काल-रूपिणी हैं। आदि।

कहाँ तक प्रमाण गिनाए जाएँ, जगदाधार जगज्जननी जगदात्मा 'परा-शक्ति' की महिमा से नाना पुराण-निगमागम भरे पड़े हैं। यहाँ तक कि सहस्त्र-मुखी भगवान् शेषनाग, ब्रह्मा जी एवं देवाधिदेव महा-देव जी भी 'परा-शक्ति' के प्रभाव और बल का वर्णन करने में समर्थ नहीं हैं। पुण्यात्माओं के घरों

में स्वयं ही '**लक्ष्मी**'-रूप से, पापियों के यहाँ '**दरिद्रता**'-रूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदयों में '**बुद्धि**'-रूप से, सत्पुरुषों में '**श्रद्धा**'-रूप से तथा कुलीन मनुष्यों में '**लज्जा**'-रूप से जो निवास करती हैं, उनकी महिमा अपरम्पार है। फिर '**या देवी सर्व-भूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता**' अर्थात् जो देवी सब प्राणियों में '**भ्रान्ति**'-रूप से स्थित हैं अर्थात् जिसके द्वारा ही सम्पूर्ण चराचर जगत् के जीव-मात्र भ्रमित हैं, उसका साधिकार गुणानुवाद यह एक मूर्ख जीव कर भी कैसे सकता है? यह तो उस करुणा-मयी की कृपा-कटाक्ष का ही आशीर्वाद है, जिससे ऋषि-मनीषियों के अनुभव-सिद्ध वचनों को यहाँ उद्धृत किया जा सका है।

'**ऋग्वेद**' के दशम-मण्डलान्तर्गत १२७ वें '**रात्रि-सूक्त**' में भी उसी **अव्यक्त प्रकृति** का प्रामाणिक स्तवन **वैदिक मन्त्र-द्रष्टा ऋषियों** के द्वारा किया गया है तथा **तन्त्रोक्त** '**रात्रि-सूक्त**'-'**त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका**' में भी **महा-विद्या, महा-माया, महा-मेधा, महा-स्मृति, महा-मोह-रूपा, महा-देवी, महा-सुरी** आदि नामों से गुण-त्रय-विभाविनी उसी '**परा-शक्ति**' की ही प्रार्थना सबकी **प्रकृति** के रूप में की गई है।

महा-दैत्य-पति शुम्भ के मारे जाने पर **इन्द्रादि देवताओं** ने **महा-देवी** की जो स्तुति की, उसमें **महा-शक्ति** के गुणानुवाद के प्रमाण प्रत्यक्ष दृष्टि-गोचर होते हैं। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य है–

'तुम्हीं **चराचर जगत् की अधीश्वरी** हो। तुम इस **जगत् का एक-मात्र आधार** हो क्योंकि **पृथ्वी**-रूप में तुम्हारी ही स्थिति है। तुम इस **विश्व की कारण-भूता परा-माया** हो। हे देवि! **सम्पूर्ण विद्याएँ** तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। हे जगदम्ब! एक-मात्र तुमने ही सम्पूर्ण **विश्व को व्याप्त** कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है! तुम तो **स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे** एवं **परा-वाणी** हो।'

इसी स्तुति के अन्तर्गत देवताओं ने **ब्रह्म-मयी** '**परा-शक्ति**' को **स्वर्ग** और **मोक्ष** देनेवाली बताया है–'**सर्व-भूता यदा देवी, स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी**', परन्तु वह केवल **स्वर्ग** और **मोक्ष** ही नहीं, **धर्मार्थ-काम-मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ** की देनेवाली है। यह '**परा-शक्ति**'-**सर्व-देव-मयी** है अर्थात् सभी देवता उसी के रूप-भेद मात्र हैं। '**महा-निर्वाण तन्त्र**' में वर्णित है–**हे देवि**! तुम्हारे आकार और वर्ण के अनन्त रूप हैं। विविध प्रकार की साधनाओं द्वारा साध्य इन सब रूपों का वर्णन कौन कर सकता है?

शास्त्रों में असंख्य देवियों का परिचय मिलता है। **नाम-रूप** से ये एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी परमार्थतः भिन्न न होकर वस्तुतः एक ही **महा-शक्ति** के विभिन्न रूप हैं। '**देवी-पुराण**' में इसका स्पष्ट प्रमाण मिलता है–'**शाक्तानन्द-तरङ्गिणी**' में भी उदाहरण एवं प्रमाण-सहित इस उक्ति का प्रामाणिक विश्लेषण किया गया है। उदाहरण-स्वरूप–

'कोई उसे **उमा** कहते हैं, तो दूसरे लोग **शक्ति, लक्ष्मी** और अन्य लोग उसे **भारती, गिरिजा, अम्बिका** कहते हैं। अन्य उसे **दुर्गा, भद्र-काली, चण्डी, महेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही** कहते हैं। दूसरे लोग **ब्राह्मी, विद्या, अविद्या, माया** कहते हैं और श्रेष्ठ ऋषि-गण उसे **प्रकृति** और **अपरा** कहते हैं।'

उपर्युक्त सभी प्रमाणों को देखने से मालूम होता है कि **सच्चिदानन्द-मयी परा-शक्ति महा-लक्ष्मी** ही जगत् की **सृष्टि-स्थिति-संहार क्रम** का आदि कारण और मूलाधार हैं। वही **सर्व-देव-मयी त्रिगुणा परमेश्वरी महा-लक्ष्मी** ही देवी की समस्त विकृतियों (अवतारों) की प्रधान प्रकृति हैं। **तीनों गुणों की साम्यावस्था-रूपा प्रकृति** भी उनसे भिन्न नहीं है। **सूक्ष्म-स्थूल, दृश्य-अदृश्य** अथवा **व्यक्त-अव्यक्त**–सब उन्हीं के स्वरूप हैं। वे **सर्वत्र व्यापक** हैं। इस सम्पूर्ण चराचर जगत् में उन्हीं **राज-राजेश्वरी महा-लक्ष्मी परा-शक्ति** का साम्राज्य है।

परन्तु वर्तमान में यह श्रद्धा-विश्वासवाला बुद्धि-गम्य ज्ञान का युग नहीं है। यह तो तर्क-सम्मत प्रामाणिक प्रमाणोंवाला युक्ति-सङ्गत विज्ञान का काल है। आजकल यह एक परम्परा ही चल पड़ी है कि जब तक किसी भी विषय के प्रमाण प्रस्तुत नहीं किए जाते हैं, तब तक कोई उसे स्वीकार भी नहीं करता। अतः आइए, हम इस लेख में प्रतिपादित विषय-वस्तु से सम्बन्धित उपर्युक्त सर्व-प्रथम-'**सर्वस्याद्या महा-लक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी**' वाले श्लोक में वर्णित विषय का शास्त्र-सम्मत प्रामाणिक विवेचन युक्त-तर्क-सङ्गत एवं प्रमाणों सहित विश्लेषण कर, '**गोपनीयं प्रयत्नेन, स्व-योनिरिव पार्वति**' वाले उस गुप्त शास्त्र-सिद्धान्त के रहस्यों को खोलने का प्रयत्न करें, जिसके विषय में यहाँ तक प्रसिद्ध है कि पिता अपने पुत्र को भी वह गुप्त-ज्ञान नहीं देता-'**पिता पुत्रं न दीयते।**'

परा-शक्ति महा-लक्ष्मी-सृष्टि-स्थिति-संहार करनेवाली और **त्रिगुण-मयी** कैसे हैं? **सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का आदि कारण** एवं **मूलाधार** वह किस प्रकार हैं? इसके शास्त्रीय प्रमाण क्या हैं? आगे देखिए–

शाक्त जगत् में '**श्री दुर्गा सप्तशती**' का ठीक वैसा ही आदर और सम्मान है, जैसा कि **वैदिक धर्म** में वेदों का है। '**सप्तशती**' के **षडङ्गों** में से अन्यतम '**रहस्य-त्रय**' में प्रमुख **प्राकृतिक** या **प्राधानिक प्रथम रहस्य** में **परा-शक्ति महा-लक्ष्मी** के **कारणात्मक प्रकृति-भूता-स्वरूप** का प्रतिपादन किया गया है। '**प्राकृतिक रहस्य**' के अनुसार तो **महा-लक्ष्मी परा-शक्ति** ही सब प्रपञ्च तथा सम्पूर्ण अवतारों का आदि कारण हैं। वे **सच्चिदानन्द-मयी परमेश्वरी** सूक्ष्म रूप से सर्वत्र व्याप्त होती हुई भी **भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए परम दिव्य चिन्मय सगुण-रूप** से भी सदा विराजमान रहती हैं।

परमेश्वरी महा-लक्ष्मी ने इस सम्पूर्ण जगत् को शून्य देखकर अपने तेज से ही इस जगत् की शून्यता को परिपूर्ण किया है। यथा–

शून्यं तदखिलं लोकं, विलोक्य परमेश्वरी।
शून्यं तदखिलं स्वेन, पूरयामास तेजसा।।

परमेश्वरी महा-लक्ष्मी के **श्री-विग्रह** की कान्ति **तपाए हुए स्वर्ण** के समान है तथा **तपाए हुए सुवर्ग** के ही उनके आभूषण हैं। वे अपने चारों हाथों में **मातुलिङ्ग** (**बिजौरा**), **गदा, खेट** (**ढाल**) और **पान-पात्र** तथा मस्तक पर **नाग, लिङ्ग** और **योनि** धारण किए रहती हैं–

तप्त - काञ्चन - वर्णाभा, तप्त - काञ्चन - भूषणा।
मातु - लिङ्गं गदां खेटं, पान - पात्रं च विभ्रती।।
नागं लिङ्गं च योनिं च, बिभ्रती नृप! मूर्द्धनी।

'भुवनेश्वरी-संहिता' के अनुसार 'गदा'-'क्रिया-शक्ति' का, 'खेट' (ढाल)-'ज्ञान-शक्ति' का और 'पान-पात्र'-'तुरीय-वृत्ति' (सच्चिदानन्द-मय स्वरूप में स्थिति) का सूचक है। इसी प्रकार 'नाग' से 'काल' का, 'योनि' से 'प्रकृति' का और 'लिङ्ग' से 'पुरुष' का बोध होता है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति, पुरुष एवं काल–तीनों का अधिष्ठान परा-शक्ति महा-लक्ष्मी ही हैं।

मूल-प्रकृति चतुर्भुजा महा-लक्ष्मी त्रिगुण-मयी परा-शक्ति परमेश्वरी ने सम्पूर्ण चराचर जगत् में अपने आपको एकाकी (अकेली) देखकर सृष्टि-रचना के विचार से, अपने तमो-गुण और सत्त्व-गुण उपाधि के द्वारा अपने दो रूप और प्रकट किए, जिनकी क्रमशः 'महा-काली' और 'महा-सरस्वती' के नाम से प्रसिद्धि हुई। उदाहरणार्थ–

शून्यं तदखिलं लोकं, विलोक्य परमेश्वरी। बभार परमं रूपं, तमसा केवलेन हि।।
सा भिन्नाञ्जन-सङ्काशा, द्वंष्ट्राञ्चित-वरानना।

अर्थात् सम्पूर्ण जगत् को शून्य देखकर परमेश्वरी महा-लक्ष्मी ने केवल अपनी तमो-गुण-रूप उपाधि के द्वारा एक अन्य उत्कृष्ट रूप धारण किया, जिसके शरीर की कान्ति निखरे हुए काजल की भाँति काले रङ्ग की थी। स्त्रियों में श्रेष्ठ उन तामसी देवी को–

महा - माया महा - काली, महा - मारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैक - वीरा, काल - रात्रिर्दुरत्यया।।

आदि कर्मों के अनुरूप उनके नाम बताकर महा-लक्ष्मी परमेश्वरी ने अत्यन्त शुद्ध सत्त्व-गुण के द्वारा दूसरा रूप धारण किया, जो चन्द्रमा के समान श्वेत-वर्ण का था–

तामित्युक्त्वा महा - लक्ष्मीः, स्वरूपमपरं नृप!
सत्त्वाख्येनाति - शुद्धेन, गुणेनेन्दु - प्रभं दधौ।।

तमो-गुणी महा-काली की तरह ही परा-शक्ति-महा-लक्ष्मी ने सतो-गुणी महा-सरस्वती को भी उनके गुण-कर्मानुसार नाम प्रदान किए, जो इस प्रकार हैं–

महा - विद्या महा - वाणी, भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी काम - धेनुर्वेद - गर्भा सुरेश्वरी।।

तदनन्तर मूल प्रकृति-महा-लक्ष्मी के परामर्श से महा-लक्ष्मी के सहित तीनों महा-देवियों ने 'अमैथुनी सृष्टि' के द्वारा स्त्री-पुरुष के एक-एक जोड़े उत्पन्न किए। तमो-गुणी महा-काली से शङ्कर और सरस्वती, रजो-गुण-प्रधान (कारण तम और सत्त्व गुण तो उन्होंने अपने से अलग कर ही दिए) महा-लक्ष्मी से ब्रह्मा और लक्ष्मी तथा सतो-गुण-मयी महा-सरस्वती से विष्णु और काली का

प्रादुर्भाव हुआ। इन अवतारों का क्रम निम्न प्रकार सहज ही समझा जा सकता है–

त्रिगुण-मयी चतुर्भुजा महा-लक्ष्मी (मूल-प्रकृति)

(रजो-गुणी)

महा-काली (चतुर्भुजा)		**महा-सरस्वती** (चतुर्भुजा)
(तमो-गुणी)		(सतो-गुणी)
शङ्कर-सरस्वती	**ब्रह्मा-लक्ष्मी**	**विष्णु-काली**
(श्वेत-वर्ण)	(पीत-वर्ण)	(नील-वर्ण)

सर्व-प्रथम **महा-लक्ष्मी** ने ही स्वयं स्त्री-पुरुष का एक जोड़ा उत्पन्न किया, जो **हिरण्य-गर्भ-वर्ण**, सुन्दर तथा कमल के आसन पर विराजमान था–

इत्युक्त्वा ते महा - लक्ष्मीः, ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्य - गर्भौ रुचिरौ, स्त्री - पुंसौ कमलासनौ।।

तदुपरान्त **महा-लक्ष्मी** ने पुरुष और स्त्री को क्रमशः अग्राङ्कित श्लोक में वर्णित नाम प्रदान किए–

ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति, धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्।।

इसके बाद **महा-काली** ने **शङ्कर** और **सरस्वती** के जिस श्वेताङ्ग जोड़े को उत्पन्न किया था, वे दोनों निम्न नामों से प्रसिद्ध हुए–

स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः, कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः, सा स्त्री भाषा स्वराऽक्षरा।।

महा-सरस्वती ने **विष्णु-काली** के जिस नीलाङ्ग जोड़े को प्रकट किया था, वह–

विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो, वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी, सुन्दरी सुभगा शिवा।।

नामों से प्रसिद्ध हुआ। तदुपरान्त **महा-लक्ष्मी** ने **त्रयी-विद्या-रूपा सरस्वती** को **ब्रह्मा** के लिए पत्नी-रूप में समर्पित किया, रुद्र को **वर-दायिनी गौरी** तथा भगवान् **वासुदेव** को **लक्ष्मी** दे दी।

इसके बाद **सरस्वती** के साथ संयुक्त होकर **ब्रह्मा जी** ने **ब्रह्माण्ड** को उत्पन्न किया और **परम पराक्रमी भगवान् रुद्र** ने **गौरी** के साथ मिलकर उसका भेदन किया। पहले **ब्रह्माण्ड** में प्रधान (महत्तत्त्व) आदि कार्य-समूह-पञ्च-महा-भूतात्मक समस्त **स्थावर-जङ्गम-रूप जगत्** की उत्पत्ति हुई। फिर **लक्ष्मी** के साथ **भगवान् विष्णु** ने **जगत् का पालन-पोषण** किया और **प्रलय-काल** में **गौरी** के साथ **महेश्वर** ने **सम्पूर्ण जगत् का संहार** किया।

अतएव उन **महिमा-मयी महा-लक्ष्मी** के सम्बन्ध में कहा गया कि–

सांख्या वदन्ति पुरुषं प्रकृतिं च यां ताम्।
चैतन्य - भाव - रहितां जगतश्च कर्त्रीम्।।
ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरिदं महेशः।
शक्त्या तवैव हरते ननु चान्त - काले।।
ईशान तेऽपि च भवन्ति त्वया विहीना।
तस्मात् त्वमेव जगतः स्थिति-नाश-कर्त्री।।

संसार-रूपी रङ्ग-मञ्च की नाट्यकार **महा-देवी महा-लक्ष्मी** हैं। इसीलिए तो कहा गया है–

त्वं शक्तिरेव जगतामखिल - प्रभावा।
त्वं निर्मितं च सकलं खलु भाव - मात्रम्।।
त्वं क्रीडसे निज - विनिर्मित - मोह - जाले।
नाट्ये यथा विहरते स्व - कृतेन ये वै।।

अर्थात् **भगवती महा-लक्ष्मी** ही अखिल जगत् की निर्मात्री हैं। आप ही जगत् को अपने अंश से जीवन प्रदान करती हैं।

'श्रीमद्भगवद्-गीता' में भी **योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण** ने **सत्त्व, रज** एवं **तम** इन तीनों **गुणों** की उत्पत्ति **प्रकृति** से बताई है–**'सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृति-सम्भवाः'** तथा उस **महत् ब्रह्म-रूप प्रकृति** अर्थात् **त्रिगुण-मयी माया** को ही **सम्पूर्ण भूतों की योनि** अर्थात् जन्म-दात्री बतलाया है–(गीता १४।३)। इन्हीं **सत्त्व-गुण-प्रधाना त्रिगुण-मयी महा-लक्ष्मी** के **तामसी** आदि भेद से **तीन स्वरूप** बतलाए गए हैं–

'त्रि-गुणा तामसी देवी, सात्त्विकी या त्रिधोदिता।'

सृष्टि, पालन और **संहार** की शक्ति-भूता **सनातनी देवी महा-लक्ष्मी** को ही गुणों का आधार एवं **सर्व-गुण-मयी** बतलाया गया है–

सृष्टि - स्थिति - विनाशानां, शक्ति - भूते सनातनि!
गुणाश्रये गुण - मये, नारायणि नमोऽस्तु ते।।

योगीराज वासुदेव की वाणी में–**'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च'** एक शाश्वत सनातन सत्य सिद्धान्त है। **आदि शङ्कराचार्य जी** ने भी **'पुनरपि जननं, पुनरपि मरणम्'** कहकर इस सिद्धान्त का पुष्टीकरण और समर्थन किया है। यह पहले भी बताया जा चुका है कि **ब्रह्मा-सरस्वती** ने **सृष्टि, लक्ष्मी-विष्णु** ने **पालन** एवं **काली-शङ्कर** ने **संहार**-कार्य सँभाला। यहाँ पर देखने और समझने लायक दार्शनिक तत्त्व यह है कि **ब्रह्मा** के द्वारा बनाई गई सृष्टि का **ब्रह्मा** की बहन **लक्ष्मी, विष्णु** के साथ पालन करती हैं। **विष्णु** का पालन-कार्य समाप्त होने पर **विष्णु-बहन काली, शिव** के साथ उसका संहार

करती हैं एवं **शिव** के द्वारा संहारित जीवों की **शिव-बहन सरस्वती, ब्रह्मा** के साथ पुनः सृष्टि करती हैं। यह चक्र यथा-वत् काल-क्रम से बिना रुके-बिना थके निरन्तर चलता रहता है। **बहन (प्रकृति)** बिना नुक्ता-चीनी किए अपने **भाई (गुंण)** के कार्य में सदा-सर्वदा सहयोग देती है।

तम-रज से '**सृष्टि**', **रज-सत्** से '**स्थिति**' (पालन) एवं **सत्-तम** से '**संहार**'-कार्य होता है। '**प्रकृति-पुरुष**' या '**शिव-शक्ति**' का यही गुप्त दार्शनिक रहस्य है, जिसे अज्ञानी जन नहीं जान सकते। इसीलिए तो कहा गया है कि-'**चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति, नेतरे तद्विदो जनाः।**' इस रहस्य को ज्ञानी जन ही समझ सकते हैं। **भगवती महा-माया** ज्ञानियों के भी चित्त को बल-पूर्वक खींचकर मोह में डाल देती हैं। वे ही इस सम्पूर्ण चराचर जगत् की सृष्टि करती हैं तथा वे ही प्रसन्न होने पर मनुष्यों को मुक्ति के लिए वरदान देती हैं। वे ही **परा-विद्या** '**संसार-बन्धन**' और '**मोह**' की हेतु-भूता **सनातनी देवी** तथा **सम्पूर्ण ईश्वरों की भी अधीश्वरी** हैं।

ज्ञान के लिए प्रसिद्ध है-

ज्ञानाग्निः सर्व-कर्माणि, भस्म-सात् कुरुते तथा।
न हि ज्ञानेन सदृशं, पवित्रमिह विद्यते।।

ज्ञान पाता कौन है? '**श्रद्धा-वाँल्लभते ज्ञानम्।**' परन्तु **श्रद्धा-विश्वास-रहित सत् ज्ञान** के अभाव में **काली** को **तमो-गुणी** एवं सरस्वती को **सतो-गुणी** मानने की परम्परागत एक परिपाटी चलती आ रही है, जो यथार्थतः अशास्त्रीय एवं भ्रान्ति मात्र ही है। शास्त्रीय दृष्टि में इस भ्रान्ति का निवारण अनिवार्य है।

विदेह ज्ञानी जनक की सभा में **अष्टावक्र जी** वाला उदाहरण यहाँ ठीक प्रमाणित होता है। रूप-रङ्ग की परीक्षा मात्र से **ज्ञानी जनक** की विद्वत्-सभा को '**मूर्खों की सभा**' का सम्बोधन सुनना पड़ा था। वही बात आज **काली** को **तमो-गुणी** कहनेवालों पर लागू होती है। **तमो-गुणी चतुर्भुजा महा-काली** से उत्पन्न **शङ्कर-सरस्वती** के जोड़े को श्वेत-वर्ण के कारण सात्त्विक एवं **सतो-गुणी चतुर्भुजा महा-सरस्वती** से प्रादुर्भूत **विष्णु-काली** के नील-वर्ण जोड़े को **काली** के नील-वर्ण के कारण **तामसी** कहने के अतिरिक्त अन्य शास्त्रीय प्रमाणों का अभाव है। काली को सिर्फ रूप-रङ्ग मात्र के लिए अशास्त्रीय रूप से **तमो-गुणी** कहना एक भ्रामक और गलत सिद्धान्त है।

शङ्कर के लिए '**कर्पूर-गौरम्**' तथा **सरस्वती** के लिए '**शीतांशु-तुल्य-प्रभाम्**' उक्ति सर्वत्र '**लोके च वेदे च**' सुप्रसिद्ध है। वैसे ही **विष्णु को** '**मेघ-वर्णम्**' एवं **काली** को '**नीलाश्म-द्युतिमास्य**' अर्थात् '**नील-वर्णा**' शास्त्रादि में पदे-पदे बताया गया है। सिर्फ वर्ण मात्र से गुण की पहिचान करना अशास्त्रीय है तथा साथ ही असङ्गत भी। इसी भूल के लिए तो **राजा जनक** की विद्वत्-सभा को '**मूर्खों की सभा**' सुनना पड़ा था। निम्न शास्त्रीय प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाएगा कि **श्वेताङ्गी शङ्कर** कैसे **तमो-गुणी** हैं तथा **नील-वर्ण विष्णु** क्यों **सतो-गुणी** कहे जाते हैं। **महिषासुर-मारणार्थ देवी** को दिए जानेवाले दिव्य तेजों का वर्णन देखिए कि **शङ्कर** और **विष्णु** का किस वर्ण का तेज है और उसका क्या गुण है-

शङ्करस्य शरीरात्तु, निःसृतं महदद्भुतम्।
रौप्य - वर्णमभूत् तीव्रं, दुर्दर्शं दारुणं महत्।।
भयङ्करं च दैत्यानां, देवानां विस्मय - प्रदम्।
घोर - रूपं गिरि - प्रख्यं, तमो - गुणमिवापरम्।।
ततो विष्णु - शरीरात्तु, तेजो - राशिमिवापरम्।
नीलं सत्त्व - गुणोपेतं, प्रादुराप्त - महा - द्युतिः।।

मूल प्रकृति 'महा-लक्ष्मी' त्रिगुण-मयी से तम और सत् गुण के अलग होने पर उनके द्वारा उत्पन्न हिरण्य-गर्भ-वर्णा (स्वर्ण-वर्णा) कमलासन-स्थित 'ब्रह्मा-लक्ष्मी' का वर्ण एक-सा था। दोनों में रजो-गुण की प्रधानता रही। उसी तरह तमो-गुणी 'महा-काली' से प्रकटे श्वेत-वर्ण 'शङ्कर-सरस्वती' के जोड़े में से शङ्कर में तमो-गुण प्रधान रहा तथा सतो-गुणी महा-सरस्वती से प्रादुर्भूत नील-वर्ण 'विष्णु-काली' के जोड़े में से विष्णु में सतो-गुण ही मौजूद रहा, तो तमो-गुणी शङ्कर की बहन सरस्वती को सात्त्विकी एवं सतो-गुणी विष्णु की बहन को तामसी किस आधार पर एवं किस शास्त्रीय सिद्धान्त पर माना जाता है? क्या इस प्रकार की विरोधाभासवाली बात अशास्त्रीय और अप्रामाणिक नहीं है?

सरस्वती को सात्त्विक एवं काली को तामसी गुण-युक्ता मानना केवल स्वार्थी सम्प्रदायों की अशास्त्रीय बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस प्रकार की बातें शास्त्रीय प्रमाणों के अभाव में सर्वथा असैद्धान्तिक एवं तथ्य-हीन हैं, जो भ्रामक धारणा और गलत प्रचार के अलावा कुछ नहीं हैं। काली को शास्त्रों में पदे-पदे मोक्ष-दात्री कहा है। क्या तामसी गुण व्यक्ति को मोक्ष दे सकता है? कदापि नहीं। हमें इस अशुद्ध सिद्धान्त का परित्याग करना चाहिए। अन्धानुकरण करना अज्ञानियों का काम है।

शङ्कर का अवतार माने जानेवाले आदि शङ्कराचार्य जी ने तो तमो-गुण-प्रधान श्वेताङ्ग शङ्कर के लिए यहाँ तक कहा है कि चिता-भस्म-धारी, विष-भोजी, दिगम्बर, जटा-नाग-धारी, पशु-पति, भूत-नाथ, कपाल-पात्री को 'जगदीश' की पदवी भी भवानी माँ काली (सतो-गुणी) के साथ पाणि-ग्रहण करने के कारण ही मिली है।

'या देवी सर्व-भूतेषु०' वाले तन्त्रोक्त 'देवी-सूक्तम्' में भी उन्हीं मूल प्रकृति त्रिगुण-मयी परा-शक्ति महा-लक्ष्मी की सूक्ष्म त्रिगुण-मयी अलग-अलग प्रकृतियों को सब जीवों में स्थित बतलाया गया है। सत्त्व-रज-तम क्रम से जीव मात्र में प्रत्येक गुण से सम्बन्धित नौ अर्थात् तीनों गुणों की नौ के हिसाब से सत्ताइस सूक्ष्म प्रकृतियों का न्यूनाधिक गुण के हिसाब से निवास होता है। गुणों के क्रम से वे निम्न प्रकार हैं–

	सत्त्व	रज	तम
१.	चेतना	स्फूर्ति	माया
२.	बुद्धि	शक्ति	निद्रा

	सत्त्व	रज	तम
३.	मेधा	जाति	क्षुधा
४.	क्षान्ति (क्षमा)	श्रद्धा	छाया
५.	शान्ति	कान्ति	तृष्णा
६.	लज्जा	लक्ष्मी	धृति
७.	स्मृति	वृत्ति	पुष्टि
८.	दया	व्याप्ति	तुष्टि
९.	नीति	मातृ	भ्रान्ति

स्थानाभाव और विस्तार-भय से तीनों गुणों की सभी प्रकृतियों के अलग-अलग उदाहरण देना यहाँ अपेक्षित नहीं है। कुछ देखिए-चेतना और **बोध-शक्ति (बुद्धि)** से **सत्त्व-गुण** बढ़ता है। यथा-

सर्व - द्वारेषु देहेऽस्मिन्, प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्, विवृद्धं सत्त्वमित्युत।।

तमो-गुण की वृद्धि से **प्रमाद, मोह, निद्रादि** उत्पन्न होते हैं-

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च, प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते, विवृद्धे कुरु - नन्दन!।।

कहाँ तक गिनाया जाए! **परा-शक्ति महा-लक्ष्मी** ही **सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण** हैं। आप **त्रि-गुणा** हैं। **भगवान् विष्णु** और **शङ्कर** आदि देवता भी आपका पार नहीं पाते। आप ही सबका आश्रय हैं। आप ही सबकी **आदि-भूत अव्याकृता परा प्रकृति** हैं।

'महा-लक्ष्मी' परा-शक्ति परमेश्वरी ही **सर्व-सत्त्व-मयी** तथा **सब सत्त्वों की अधीश्वरी** हैं। वे ही **निराकार** और **साकार** रूप में रह कर नाना प्रकार के नाम धारण करती हैं। **सगुण-वाचक सत्य, ज्ञान, चित्, महा-माया** आदि नामान्तरों से इन **'महा-लक्ष्मी'** का निरूपण किया गया है। केवल एक नाम **(महा-लक्ष्मी)** से अथवा अन्य प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से उनका वर्णन नहीं हो सकता।

उपर्युक्त कुछेक प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि **सच्चिदानन्द-मयी परा-शक्ति 'महा-लक्ष्मी' ही सृष्टि-स्थिति-संहार-कर्त्री** हैं। वही **त्रि-गुणा** सबका आदि कारण हैं। सम्पूर्ण चराचर जगत् की **सर्व-शक्तिमान् परा-शक्ति परमेश्वरी** भी वही हैं। अत: **'सर्व-रूप-मयी देवी, सर्वं देवी-मयं जगत्'** तत्त्व को जानकर उन **विश्व-रूपा परमेश्वरी** को नमस्कार करते हुए काल के काल **महा-काल** की शक्ति **'महा-काली'** के कृपा-कटाक्षार्थ काली-युत कलम को, विश्व-कल्याणार्थ शुभ कामना करते हुए **परा-शक्ति परमेश्वरी** को **श्रीमद्-गुरु-चरण-कमलों के सहित प्रणाम** करते हुए, विश्राम प्रदान करता हूँ।

-'कुल-सेवक' श्री श्याम कसेरा, कटक (उड़ीसा)

***

जगत् की माता श्रीकमला

श्रीकमला माता जगत् की माता हैं। इन्हें संसार में वही स्थान प्राप्त है, जिस स्थान के लिए प्राणी मात्र सदा चिन्तित रहता है। सांसारिक प्राणियों का लक्ष्य यद्यपि **चतुर्वर्ग**-प्राप्ति (**१. अर्थ, २. धर्म, ३. काम** और **४. मोक्ष** की प्राप्ति) है, तथापि इनमें से तीन को छोड़कर लोग '**अर्थ**' की ओर अधिक झुकते हैं। इसका कारण यह है कि **माता कमला** '**अर्थ की अधिष्ठात्री देवी**' हैं। इनकी '**आकर्षण-शक्ति**' ऐसी है कि प्राणी उस चुम्बक-शक्ति के सामने आप-से-आप चला जाता है। यह '**मातृ-शक्ति**' का गुण है कि वह अपने सहज स्वाभाविक वात्सल्य-प्रेम के पाश से अपने प्रिय पुत्रों को बाँध ही लेती हैं।

सर्व-दोष-हरा लक्ष्मी (सभी दोषों को दूर करनेवाली लक्ष्मी)

माता कमला को, जो संसार में '**लक्ष्मी**' के नाम से विख्यात हैं, कहा जाता है कि '**सर्व-दोष-हरा लक्ष्मीः।**' तात्पर्य यह कि **माता कमला** के सान्निध्य में आने पर किसी भी प्राणी का कोई भी दोष रह नहीं पाता। यही कारण है कि **भगवान् विष्णु** इन्हें एक क्षण के लिए भी छोड़ना नहीं चाहते। पल मात्र के लिए भी यदि **माता कमला भगवान् विष्णु** से अलग हो जाती हैं, तो उनमें भी अनेक दोष आने का भय बना रहता है। इसी आशय को स्पष्ट करने के उद्देश्य से '**मत्स्य-पुराण**' में कहा गया है–

यथा न कमला देहात्, प्रयाति तव केशव!।
तथा ममापि देवेश!, शरीरे स्वे कुरु प्रभो!।।

अर्थात् हे **केशव (विष्णु)**, जिस तरह तुम्हारी देह से **कमला (लक्ष्मी)** अलग नहीं होतीं, उसी तरह तुम भी मेरे शरीर में सदा के लिए निवास करो।

तात्पर्य यह कि **विष्णु** के भक्त, **विष्णु** के लोभ से अपने शरीर में **विष्णु** का निवास चाहते हैं, ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि **वैष्णव भक्त** यह चाहते हैं कि **विष्णु** यदि मेरे शरीर में, आत्मा में सदा निवास करने लग जाएँगे, तो **माता कमला (लक्ष्मी)** का निवास स्वयं ही होने लग जाएगा, जिसका सु-परिणाम यह होगा कि बिना प्रयास ही **माता लक्ष्मी** मेरे सभी दोषों को दूर कर डालेंगी।

संसार में दूसरे जो भक्त हैं, जो दुःख के सागर में डूबते-उतराते रहते हैं, वे भी **माता कमला** की ही शरण ग्रहण करते हैं। 'मत्स्य पुराण' में ही बताया गया है कि संसार का कोई भी प्राणी–बालक से लेकर बूढ़े तक और स्त्री-पुरुष सब अपने दुःखों के विनाश के लिए **माता कमला** को ही शरण-सुख-दायिनी समझते हैं। इसीलिए **भगवान् विष्णु** से बार-बार प्रार्थना करते हैं और **माता कमला** से अनुरोध करते हैं कि '**हे माँ! तू ही–मुझे दुःख के सागर से निकाल सकती हो**' क्योंकि–

यथा न देवि! देवेशः, त्वां परित्यज्य गच्छति।
तथा मामुद्धराशेष - दुःख - संसार - सागरात्।।

अर्थात् हे देवि! भगवान् देवेश (शिव) तुम्हें छोड़कर जिस तरह नहीं जाते हैं (सुखी जीवन व्यतीत करते हैं), उसी तरह तुम भी सम्पूर्ण दुःखों के समुद्र से मेरा उद्धार करो, मेरा जीवन सुखी बनाओ।

विष्णु-प्रिया, शिव-प्रिया माता कमला

इस तरह **माता कमला** के चरण के लोभी भक्त केवल **विष्णु** के ही भक्त नहीं, **शिव** के भी भक्त हो गए हैं, जिन्होंने **माता कमला** की शरण में आकर अपने जीवन को सार्थक बनाया है। इसीलिए **माता कमला** का जहाँ कहीं भी पुराणों में नाम आया है, वहाँ '**विष्णु-प्रिया**' के नाम से ही नहीं, अपितु '**शिव-प्रिया**' भी कहा गया है। कुछ पुराणों में तो ऐसे नाम आए हैं, जिनमें **माता कमला** का भी नाम आया है। '**देवी भागवत पुराण**', '**मत्स्य पुराण**' और '**मार्कण्डेय पुराण**' में तो ऐसे वर्णन आए हैं, जिनसे पता चलता है कि **माता कमला आदि-शक्ति** के रूप में ही मान्य हैं। '**देवी भागवत**' के अध्याय तीन, श्लोक चार में जैसा वर्णन है, उसी प्रकार का और उन्हीं नामों का वर्णन '**मत्स्य पुराण**' में भी है। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि **माता कमला** ने अनेक नामों से संसार के प्राणियों का कल्याण किया है। पुराणों में जहाँ दान-पुण्य के विषय हैं, जहाँ भगवान् शङ्कर और **विष्णु** के नाम लेना प्रचलित है, वहाँ पर भी कई पुराणों में **माता कमला** का ही नाम है। इससे कोई भी पुराण-वाचक यही कहेगा कि **माता कमला**-'**सर्व-शक्ति-मती**' और '**सर्व-शक्ति-प्रदायिनी**' हैं। '**देवी भागवत पुराण**' कहता है-

कीर्तिर्मतिः स्मृति - गती, करुणा दया त्वम्।
श्रद्धा धृतिश्च वसुधा, कमला जया च।।
पुष्टिः कलाऽथ विजया, गिरिजा जया त्वम्।
तुष्टिः प्रभा त्वमसि, बुद्धिरुमा रमा च।।

सर्व-शक्ति-प्रदायिनी माता कमला

शास्त्र और **पुराणों** में जहाँ **शक्ति-प्रदायिनी शक्तियों** के नाम आए हैं, उनमें प्रायः उक्त पद्य के सभी नाम आए हैं। **माता कमला** का नाम '**वसुधा**' और '**जया**' के बीच में देने का भी कुछ तात्पर्य है। तात्पर्य यह बताया जाता है कि **माता कमला** पृथिवी पर विजय प्रदान करनेवाली हैं। इनका सेवक अर्थात् **माता कमला** का सेवक '**वसुधा**' (पृथिवी) और '**जय**'-इन दोनों को प्राप्त करता है। एक हाथ में '**वसु**' अर्थात् धन को धारण करनेवाली पृथिवी और दूसरे हाथ में '**जया**' (विजयिनी शक्ति) को प्राप्त करता है। इसीलिए **माता कमला** जगत् के प्राणियों के लिए '**सर्व-शक्ति-प्रदायिनी**' कही जाती हैं और साधारण जन इन्हें '**लक्ष्मी**' कहते हैं।

महर्षि वेद-व्यास के अनुसार **कमला (लक्ष्मी)** सर्वत्र प्रधान हैं, इनके बिना **जगत् का कल्याण** नहीं होगा। इसलिए जगत् के प्राणियों को इनका चिन्तन-मनन सभी अवस्थाओं में और सभी देवी-देवताओं के पूजन-ध्यान में करना ही चाहिए, ऐसा उपदेश किया है। अपने समस्त पुराणों में किसी-न-किसी स्थान

पर किसी-न-किसी रूप से इनका नाम अवश्य ही लिया है, इस उक्ति के प्रमाण में एक ही पद्य सर्वथा उपयुक्त होगा, यह कई पुराणों में अविकल रूप से आया है और इसमें **माता कमला** का नाम आठवें स्थान पर ही आया है। **महर्षि वेद-व्यास** को यह पद्य इतना प्रिय क्यों था कि इसका कई पुराणों में और कई स्थलों पर ज्यों-का-त्यों उल्लेख किया है, यह विचारणीय विषय है। वह पद्य है–

कुमुदा विमलाऽनन्ता, भवानी च सुधा शिवा।
ललिता कमला गौरी, सती रम्भाऽथ पार्वती।।

इस पद्य में अर्थ कुछ नहीं है। केवल **माताओं के नाम** हैं, जो संसार में **शक्ति** के नाम से विख्यात हैं। पुराणों का ऊहा-पोह करनेवालों का विचार है कि ये **बारह माताएँ** हैं। संसार के समस्त प्राणियों का कल्याण इनके बिना सम्भव नहीं है। सृष्टि के आदि-काल में **धर्म की तेरह पत्नियों** का जो वर्णन '**श्रीमद्-भागवत**' में आया है, वे ये ही **बारह माताएँ** हैं। इनमें से **एक मूर्ति देवी** ने **श्रीनर-नारायण** को पैदा किया, इसलिए वह उनकी विशेष माता बनीं। इस विषय में '**श्रीमद्-भागवत महा-पुराण**' में बताया गया है–

श्रद्धा मैत्री दया शान्तिः, तुष्टिः पुष्टिः क्रियोन्नतिः।
बुद्धिर्मेधा तितिक्षा ह्रीः, मूर्तिर्धर्मस्य पत्नयः।।

अर्थात् १. श्रद्धा, २. मैत्री, ३. दया, ४. शान्ति, ५. तुष्टि, ६. पुष्टि, ७. क्रिया, ८. उन्नति, ९. बुद्धि, १०. मेधा, ११. तितिक्षा, १२. लज्जा और १३. मूर्ति–ये **तेरह धर्म-पत्नियाँ** हैं। इनसे जो सन्तानें संसार में उत्पन्न हुईं, उनके नाम हैं–

श्रद्धा से **शुभ**, **मैत्री** से **प्रसाद**, **दया** से **अभय**, **शान्ति** से **सुख**, **तुष्टि** से **मुद** (प्रसन्नता), **पुष्टि** से **स्मय** (मुस्कान), **क्रिया** से **योग**, **उन्नति** से **दर्प**, **बुद्धि** से **अर्थ**, **मेधा** (धारणा-शक्ति) से **स्मृति** (स्मरण-शक्ति), **तितिक्षा** से **क्षेम**, **ह्री** से **प्रश्रय** और **मूर्ति** से **नर-नारायण**।

इनमें अन्तिम '**श्री मूर्ति**' **माता** से **नर-नारायण** का जन्म हुआ है। इसलिए उन्हें छोड़कर शेष हमारी **बारह माताएँ** आज अपने विभिन्न नामों से **जगत् का कल्याण** करती हैं। उनका नाम कहीं-कहीं स्थान-भेद से अवश्य बदल गया है। जैसे एक ही **गङ्गा माता** को **गङ्गा**, **जाह्नवी**, **जन्हु-सुता**, **सुर-सरि**, **भागीरथी** आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है, उसी तरह इन माताओं के नाम भी जगह-जगह पर अवश्य बदल गए हैं, इसमें सन्देह नहीं, किन्तु एक बात अवश्य विचारणीय है कि धर्म की इन तेरह पत्नियों के पति-देव '**धर्म**' तो एक ही हैं, वह हमारे रक्षक माता-पिता-स्वरूप हैं और उनकी पत्नियाँ हमारी रक्षिका माताएँ हैं। उसी प्रकार **माता कमला** का जहाँ और जिस स्थल पर नाम आया है वहाँ जिन अन्य नामों का उल्लेख हुआ है, उनके कार्य-कलापों पर ध्यान दें, तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि वही एक मेरी **माता कमला** अनेक नामों से मेरा कल्याण-साधन कर रही हैं। जहाँ मेरी बुद्धि नहीं जा पाती, वहाँ वह '**बुद्धि**' बनकर मेरी कामना पूरी करती हैं; जहाँ मेरा बल बेकार पड़ जाता है, वहाँ '**विजया**' बनकर विजय-श्री मेरे गले पहनाती हैं; कहीं

'लक्ष्मी', कहीं 'सरस्वती', तो कहीं 'चण्डी' के रूप में जगज्जननी का रूप प्रकट कर जगत् का कल्याण करती हैं। इसीलिए अष्टादश पुराणों के रचयिता महर्षि वेद-व्यास ने माता कमला के नाम का उल्लेख जहाँ किया है, वहाँ यह भी सङ्केत किया है कि और भी नाम जो माताओं के आते हैं, शास्त्रों में वर्णित हैं, सुने गए हों, सुनाए गए हों और गाए या गवाए जाते हों, उनका भी नाम माता कमला के साथ लेना चाहिए।

ललिता विजया भद्रा, भवानी कुमुदा शिवा।
वासुदेवी तथा गौरी, मङ्गला कमला सती।
उमा च दान - काले तु, प्रीयतामिति कीर्तयेत्।

अर्थात् इन द्वादश माताओं के नाम, जिनमें माता कमला का भी नाम है, दान देने के समय लेकर तब दान-पुण्य या धर्म का कोई भी कार्य करना चाहिए। अस्तु, स्पष्ट है कि माता कमला का अपने भक्तों पर अपार स्नेह है। उनके भक्त धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों को अनायास ही प्राप्त करते हैं।

जो माता कमला की शरण का अनुसरण नहीं करते, उनके लिए महर्षि वेद-व्यास कहते हैं–

प्राप्ते कलावहह, दुष्ट - तरे च काले।
न त्वां भजन्ति मनुजा ननु वञ्चितास्ते।।

अर्थात् कलि-काल के आ जाने पर इस सबसे खराब समय में जो अहह (प्रति-दिन) तुम्हारा भजन नहीं करते हैं, समझ लो, वे प्राणी अवश्य ही इस संसार में ठगे गए हैं।

–पण्डित श्री ललन पाण्डेय, पुराणाचार्य, पटना (बिहार)

***

श्रीमहा-लक्ष्मी-मन्त्र-साधना

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन-पालिन्यै लक्ष्म्यै अस्माकं दारिद्र्यं नाशय,
प्रचुर-धनं मे देहि देहि ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।

विधि–भगवती महा-लक्ष्मी का पूजन कर उक्त मन्त्र का नित्य १ माला (१०८ बार) 'जप' करने से भगवती महा-लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

–'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिलगोविन्द बोकील, पुणे

माँ लक्ष्मी की प्रधानता

जगत् की रचना अनोखी है। अनोखे जगत् के सर्ग, स्थिति, लय की जन्म-दात्री को 'लक्ष्मी' नाम से पुकारा जाता है।

सिद्धि - बुद्धि - प्रदे देवि!, भुक्ति - मुक्ति - प्रदायिनि!।
मन्त्र - मूर्ते सदा देवि!, महा - लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।
आद्यन्त - रहिते देवि!, आदि - शक्ते महेश्वरि!।
योगजे! योग-सम्भूते!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।

उक्त प्रमाणों द्वारा आदि-शक्ति, भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी एवं सर्व-शक्ति-युक्ता महा-महिमा-मयी माँ लक्ष्मी का ही कथन किया गया है।

ईश्वर का जीवों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी सम्बन्ध का अवलम्बन करके श्रीलक्ष्मी जी चेतन प्राणी को अनायास ईश्वर के निकट पहुँचा देती हैं।

संसार में पिता-पुत्र का सम्बन्ध अतीव दृढ़ है, तथापि पिता के शुष्क हृदय-गत जो प्रेम है, उसका माता की दया सदा सिञ्चन करती है। जगत् की जननी होने के कारण उसके वात्सल्य में मार्दव है, सर्वेश्वर का हृदय कठिन और सङ्कीर्ण है। लक्ष्मी जी का वात्सल्य केवल मार्दव-युक्त ही है। महा-पापी के दुःख को भी माँ लक्ष्मी सहन नहीं करतीं, चाहे किसी प्रकार से हो, अवश्य उसका उद्धार करती हैं।

पुरुष होने के कारण ईश्वर प्राणियों को अपने स्वाभाविक काठिन्य से विवश होकर अपराध का भयानक दण्ड देता है। अतः जीव ईश्वर का तो अनुग्रह-भाजन कभी बन ही नहीं सकता। कृपा, पारतन्त्र्य, अनन्यार्हता आदि गुण माँ लक्ष्मी में ही पूर्ण रूप से विद्यमान हैं, जिनके द्वारा वह निरंकुश ईश्वर को भी शासन में रखती हैं। ईश्वर श्रीलक्ष्मी की आज्ञा-पालन को सदैव प्रस्तुत रहकर अपने को धन्य समझते हैं। माँ लक्ष्मी केवल दया-मूर्ति हैं, अतः दया का अवतार मानी गई हैं। इस प्रकार जीवों का ईश्वर से भी अधिक सम्बन्ध श्रीलक्ष्मी से है।

पारतन्त्र्य से यहाँ ईश्वर पर शासन का तात्पर्य है। केवल स्वरूप से नहीं–

ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ, श्री-वत्स-वक्षा नित्यश्री।

इत्यादि प्रमाणों द्वारा माँ लक्ष्मी द्वारा ईश्वर का पालन करना एवं सदा सामीप्य सिद्ध होता है। अतः ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए माँ लक्ष्मी की आराधना के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं है।

'पाञ्च-रात्रागम' में स्वयं ईश्वर ने कहा है कि संसार में जितने प्राणी मेरे कृपा-पात्र बनना चाहते हैं, महर्षियों ने सिद्ध किया है कि उनके लिए लक्ष्मी जी ही साधन-भूता हैं। मेरी यही इच्छा है। मेरी पत्नी लक्ष्मी के साक्षात्कार से जीव सहज ही मुझे प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि लक्ष्मी पुरुषकार हैं। भगवान् श्रीकृष्ण भी कहते हैं कि "मैं हर समय 'राधिका-राधिका' मन्त्र रटता हूँ। हे राधे! तुमसे अधिक कोई पर-तत्त्व नहीं है, तेरे बिना इस जगत् का भान ही नहीं हो सकता।"

जो वैष्णव बन्धु **विष्णु** के अधीन **लक्ष्मी** हैं, इस प्रकार अयुक्त कल्पना करते हैं, कम-से-कम उनको अपने शास्त्रों को देखने का तो कष्ट करना चाहिए। 'विष्णु-पुराण' में स्पष्ट कहा गया है–

एक-देश-स्थितस्याग्ने-र्ज्योत्स्ना-विस्तारिणी यथा।
परस्य ब्रह्मणः शक्तिस्तयेदमखिलं जगत्।।

इस प्रकार '**विष्णु-पुराण**' द्वारा भी **ब्रह्म-शक्ति** का कथन हुआ है। '**अहिर्बुध्न्य-संहिता**' में लिखा है कि समस्त भावों की अपृथक् स्थित शक्तियाँ अचिन्त्य हैं। पदार्थों की शक्तियाँ कार्य द्वारा ही दृश्यमान होती हैं। स्वरूप से तो उसको **योग-गम्या** कहा है। वह समस्त भावों के साथ रहनेवाली सूक्ष्मावस्था है। उसकी 'यह शक्ति है' इस कथन द्वारा साधारण तौर पर सिद्ध करना असम्भव है। किन्तु नहीं है, इस प्रकार भी नहीं कह सकते हैं। भावों में रहनेवाली शक्तियाँ तर्क का विषय नहीं हैं। इस प्रकार **परमात्मा की शक्ति** भी चन्द्र के साथ चाँदनी की तरह सकल भावों में रहती है। भाव-अभाव-रूप पदार्थों में रहनेवाली **परमात्मा** की वह **शक्ति** ही समस्त कार्यों को करती है।

शक्ति द्वारा ही **शक्तिमान् की उत्पत्ति** है क्योंकि **पञ्च-कृत्यादि सकल कर्तृत्व** तो **शक्ति** का ही होता है। (लक्ष्मी-तन्त्र) कहता है–

१. सृष्टि, २. स्थिति, ३. संहार एवं **४. तिरोभाव** जीव के कर्म-रूप अविद्या से आच्छादित होने को कहते हैं। **५. अनुग्रह 'मोक्ष'** को कहते हैं। ये पञ्च-कर्म **श्रीलक्ष्मी जी** के हैं। इन्द्र से **श्रीलक्ष्मी** कहती हैं–चन्द्रमा की भाँति पर-**ब्रह्म** का सदा साथ देनेवाली **देवी स्वात्म-भूता अन-पायिनी अहन्ता** नाम की **परमात्मा की शक्ति** है। वह **सनातनी शक्ति** मैं हूँ। इस शक्ति का ही अपर नाम **नारायणी** है।

परमात्मा सृष्ट्यादि कार्य करने में असमर्थ होते हैं। उनको इस कार्य में प्रधानतया '**शक्ति**' की आवश्यकता रहती है। जैसे लोक में कोई बड़ा मानव सामान्य व्यक्ति के कार्य को दया-पर-वश करता है और वह कार्य उस अकिञ्चन पर लोग आरोपित करते हैं। तदनुरूप भ्रान्त मानव '**लक्ष्मी-कृत**' **कार्य** को **नारायण** में आरोपित करते हैं। यह बात भी '**लक्ष्मी-तन्त्र**' में स्पष्ट कर दी गई है। यथा–

महा-लक्ष्मी जी कहती हैं कि मैं **नित्य, निर्दोष, निरवयव, पर-ब्रह्म परमात्मा श्री नारायण की** शक्ति हूँ। उनके सकल कार्य मैं ही करती हूँ। मैं उनकी **कार्य करने की शक्ति** हूँ। अतः जो मैं करती हूँ, वह लोग भ्रान्ति से **नारायण** में आरोपित करते हैं अर्थात् अग्नि का दाह-कार्य जैसे अग्नि-गत दाह-शक्ति के कारण होता है, तदनुरूप सृष्टि आदि कार्य **परमात्मा-गत शक्ति महा-लक्ष्मी जी** के कारण होते हैं।

ईश्वर के सकल कार्यों में **श्रीमहा-लक्ष्मी** का उपयोग है, परन्तु **मोक्ष**-दान-रूप कार्य में तो **श्रीमहा-लक्ष्मी** का विशिष्ट रूप से उपयोग है। जीवों का मोक्ष **श्रीमहा-लक्ष्मी** के कारण होता है। '**रक्षा**' शब्द से **मोक्ष-दान** ही अभिप्रेत है। **परमात्मा मोक्ष-दान** में **लक्ष्मी** के सहयोग के बिना असमर्थ हैं। तब **मोक्ष-दान** में भी मुख्यत्व **श्रीमहा-लक्ष्मी** का ही है। **लक्ष्मी जी** के बिना **मोक्ष-दान** असम्भव हो जाता है। **नारायण-शरणागति** में **लक्ष्मी जी** का पुरुषकारत्व अवश्य अपेक्षित है। उसके बिना शरणागति सफल नहीं होगी। हर प्रकार से **ईश्वर की दया** ही अर्थात् **श्रीमहा-लक्ष्मी जी** ही **भुक्ति-मुक्ति का मुख्य कारण** हैं। उसके अभाव में जीव का सकल प्रयत्न व्यर्थ है। अतः कलि में **श्रीमहा-लक्ष्मी जी का आराधन** कर अपने जीवन का महा-कल्याण साधित करना चाहिए। **–पं० नथमल जी दाधीच, सीकर (राजस्थान)**

***

● सभी देवताओं के साथ इन्द्र द्वारा भगवती कमला की स्तुति ●

श्रीकमला-स्तोत्रम्

श्री नारायण ने एक बार नारद जी को बताया था कि सब देवताओं के साथ इन्द्र ने भक्ति-पूर्वक भगवती कमला की स्तुति की थी। इस स्तुति को जो तीनों सन्ध्याओं में स-भक्ति पढ़ता है, वह कुबेर के समान वैभवशाली होता है। पाँच लाख आवृत्तियाँ करने से यह स्तोत्र सिद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध हुए स्तोत्र का एक मास तक नियमित रूप से पाठ करनेवाला अति सुखी होता है–सं०

।।श्रीपुरन्दर उवाच।।

नमः कमल - वासिन्यै, नारायण्यै नमो नमः।
कृष्ण - प्रियायै सततं, महा - लक्ष्म्यै नमो नमः।।१
पद्म - पत्रेक्षणायै च, पद्मास्यायै नमो नमः।
पद्मासनायै पद्मिन्यै, वैष्णव्यै च नमो नमः।।२
सर्व - सम्पत् - स्वरूपिण्यै, सर्वाराध्यै नमो नमः।
हरि - भक्ति-प्रदात्र्यै च, हर्ष-दात्र्यै नमो नमः।।३
कृष्ण - वक्षः - स्थितायै च, कृष्णेशायै नमो नमः।
चन्द्र-शोभा-स्वरूपायै, रत्न - पद्मे च शोभने।।४
सम्पत्त्यधिष्ठातृ - देव्यै, महा - देव्यै नमो नमः।
नमो वृद्धि - स्वरूपायै, वृद्धिदायै नमो नमः।।५
वैकुण्ठे या महा-लक्ष्मीः, या लक्ष्मीः क्षीर-सागरे।
स्वर्ग-लक्ष्मीरिन्द्र-गेहे, राज - लक्ष्मीः नृपालये।।६
गृह - लक्ष्मीश्च गृहिणी, गेहे च गृह - देवता।
सुरभिः सागरे जाता, दक्षिणा यज्ञ - कामिनी।।७
अदितिः देव - माता त्वं, कमला कमलालया।
स्वाहा त्वं हविर्दाने, कव्य - दाने स्वधा स्मृता।।८
त्वं हि विष्णु - स्वरूपा च, सर्वाधारा वसुन्धरा।
शुद्ध - सत्व - स्वरूपा त्वं, नारायण - परायणा।।९
क्रोध - हिंसा - वर्जिता च, वरदा शारदा शुभा।
परमार्थ - प्रदा त्वं च, हरि - दास्य-प्रदा परा।।१०
यया विना जगत् सर्वं, भस्मीभूतमसारकम्।
जीवन्मृतं च विश्वं च, शश्वत् सर्वं यया विना।।११

सर्वेषां च परा माता, सर्व - बान्धव - रूपिणी।
धर्मार्थ - काम - मोक्षाणां, त्वं च कारण - रूपिणी।।१२
यथा माता स्तनान्धानां, शिशूनां शैशवे सदा।
तथा त्वं सर्वदा माता, सर्वेषां सर्व - रूपतः।।१३
मातृ - हीनः स्तनान्धस्तु, स च जीवति दैवतः।
त्वया हीनो जनः कोऽपि, न जीवत्येव निश्चितम्।।१४
सु - प्रसन्न - स्वरूपा त्वं, मां प्रसन्ना भवाम्बिके!।
वैरि - ग्रस्तं च विषयं, देहि मह्यं सनातनि!।।१५
अहं यावत् त्वया हीनो, बन्धु-हीनश्च भिक्षुकः।
सर्व - सम्पद् विहीनश्च, तावदेव हरि-प्रिये!।।१६
ज्ञानं देहि च धर्मं च, सर्व - सौभाग्यमीप्सितम्।
प्रभावं च प्रतापं च, सर्वाधिकारमेव च।।१७
जयं पराक्रमं युद्धे, परमैश्वर्यमेव च।।१८

।।श्रीनारायण उवाच।।

इत्युक्त्वा च महेन्द्रश्च, सर्वैः सुर - गणैः सह।
प्रणनाम साश्रु - नेत्रो, मूर्ध्ना चैव पुनः पुनः।।१९
ब्रह्मा च शङ्करश्चैव, शेषो धर्मश्च केशवः।
सर्वे चक्रुः परीहारं, सुरार्थे च पुनः पुनः।।२०
देवेभ्यश्च वरं दत्वा, पुष्प - मालां मनोहराम्।
केशवाय ददौ लक्ष्मीः, सन्तुष्टा सुर - संसदि।।२१
ययुर्देवाश्च सन्तुष्टाः, स्वं स्वं स्थानं च नारद!।
देवी ययौ हरेः स्थानं, हृष्टा क्षीरोद - शायिनः।।२२
ययतुश्चैव स्व - गृहं, ब्रह्मेशानौ च नारद!।
दत्वा शुभाशिषं तौ च. देवेभ्यः प्रीति-पूर्वकम्।।२३

।।फल-श्रुति।।

इदं स्तोत्रं महा - पुण्यं, त्रि - सन्ध्यं यः पठेन्नरः।
कुबेर - तुल्यः स भवेद्, राज-राजेश्वरो महान्।।१
पञ्च - लक्ष - जपेनैव, स्तोत्र - सिद्धिर्भवेन्नृणाम्।
सिद्ध - स्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं तु सन्ततम्।
महा - सुखी च राजेन्द्रो, भविष्यति न संशयः।।२

।।श्रीनारायणोक्तं श्रीकमला-स्तोत्रम्।।

सर्व-देव-कृतं लक्ष्मी-स्तोत्रम्

सब देवों द्वारा लक्ष्मी जी की वन्दना प्रस्तुत स्तोत्र द्वारा की गई है। प्रातः-काल उठकर जो इसका पाठ भक्ति-पूर्वक प्रति-दिन करता है, उसकी सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। पत्नी-हीन व्यक्ति सुशीला, सुन्दरी और मधुर-भाषिणी पतिव्रता पत्नी को प्राप्त करता है, जिससे पुत्र-पौत्रादि का लाभ होता है। पुत्र-हीन व्यक्ति इस स्तोत्र के पाठ के फल-स्वरूप चिरञ्जीवी, यशस्वी पुत्र प्राप्त करता है और दैव-योग से जिसे धन-सम्पत्ति, बन्धु-बान्धव, यश-कीर्ति की हानि सहनी पड़ी हो, उसका सब प्रकार से कल्याण इस स्तोत्र का पाठ करने से होता है और वह पुनः पूर्व-वत् प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसका पाठ करनेवाला संसार में सुखी होकर मोक्ष का अधिकारी होता है।–सं०

क्षमस्व भगवत्यम्ब! क्षमा - शीले परात्परे!।
शुद्ध - सत्त्व - स्वरूपे च, कोपादि- परि - वर्जिते।।१
उपमे सर्व - साध्वीनां, देवीनां देव - पूजिते!
त्वया विना जगत्-सर्वं, मृत-तुल्यं च निष्फलम्।।२
सर्व - सम्पत् - स्वरूपा त्वं, सर्वेषां सर्व - रूपिणी।
रासेश्वर्यधि-देवी त्वं, त्वत्-कलाः सर्व-योषितः।।३
कैलासे पार्वती त्वं च, क्षीरोदे सिन्धु-कन्यका।
स्वर्गे च स्वर्ग-लक्ष्मीस्त्वं, मर्त्य-लक्ष्मीश्च भू-तले।।४
वैकुण्ठे च महा - लक्ष्मीः, देव - देवी सरस्वती।
गङ्गा च तुलसी त्वं च, सावित्री ब्रह्म-लोकतः।।५
कृष्ण-प्राणाधि-देवी त्वं, गो - लोके राधिका स्वयम्।
रासे रासेश्वरी त्वं च, वृन्दावन - वने वने।।६
कृष्ण - प्रिया त्वं भाण्डीरे, चन्द्रा चन्दन - कानने।
विरजा चम्पक - वने, शत - शृङ्गे च सुन्दरी।।७
पद्मावती पद्म - वने, मालती मालती - वने।
कुन्द - दन्ती कुन्द - वने, सुशीला केतकी-वने।।८
कदम्ब-माला त्वं देवी, कदम्ब - काननेऽपि च।
राज - लक्ष्मी राज - गेहे, गृह - लक्ष्मीर्गृहे गृहे।।९

।।फल-श्रुति।।

इत्युक्त्वा देवताः सर्वे, मुनयो मनवस्तथा।
रुरुदुर्नम्र - वदनाः, शुष्क-कण्ठोष्क-तालुकाः।।१
इति लक्ष्मी - स्तवं पुण्यं, सर्व - देवैः कृतं शुभम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, स वै सर्वं लभेद् ध्रुवम्।।२
अ - भार्यो लभते भार्यां, विनीतां च सुतां सतीम्।
सुशीलां सुन्दरीं रम्यामति - सुप्रिय - वादिनीम्।।३
पुत्र - पौत्रवतीं शुद्धां, कुलजां कोमलां वराम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं, वैष्णवं चिर - जीवनम्।।४
परमैश्वर्य - युक्तं च, विद्या - वन्तं यशस्विनम्।
भ्रष्ट - राज्यो लभेद् राज्यं, भ्रष्ट-श्रीर्लभते श्रियम्।।५
हृत - बन्धुर्लभेद् बन्धुं, धन - भ्रष्टो धनं लभेत्।
कीर्ति-हीनो लभेत् कीर्तिं, प्रतिष्ठां च लभेद् ध्रुवम्।।६
सर्व - मङ्गलदं स्तोत्रं, शोक - सन्ताप - नाशनम्।
हर्षानन्द - करं शश्वद्धर्म - मोक्ष - सुहृत्-प्रदम्।।७

।।सर्व-देव-कृतं लक्ष्मी-स्तोत्रम्।।

***

भाग्योदय हेतु श्रीमहा-लक्ष्मी-साधना

भाग्योदय हेतु **श्रीमहा-लक्ष्मी** की तीन मास की सरल, व्यय-रहित साधना है। यह साधना कभी भी प्रारम्भ की जा सकती है।

'**साधना**' हेतु सर्व-प्रथम स्नान आदि के बाद यथा-शक्ति (कम-से-कम १०८ बार) "**ॐ ह्रीं सूर्याय नमः**' मन्त्र का '**जप**' करे।

फिर '**पूजा-स्थान**' में **कुल-देवताओं का पूजन** कर **भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी** के चित्र या मूर्ति का पूजन करे। पूजन में '**कुंकुम**' महत्त्व-पूर्ण है, इसे अवश्य चढ़ाए।

पूजन के पश्चात् माँ की कृपा-प्राप्ति हेतु मन-ही-मन '**सङ्कल्प**' करे। फिर विश्व-विख्यात "**श्री -सूक्त**" का १५ बार '**पाठ**' करे। इस प्रकार '**तीन मास**' उपासना करे। बाद में, नित्य एक बार पाठ करे। विशेष पर्वों पर भगवती का **अष्टोत्तर-शत-नामावली** अथवा **सहस्त्र-नामावली** से सायं-काल '**कुंकुमार्चन**' करे।

श्रीमहा-लक्ष्मी-कवचम्

ब्रह्मा जी द्वारा रचित प्रस्तुत कवच दीक्षित, अदीक्षित सभी भक्त-जनों द्वारा पाठ किया जा सकता है। १. लक्ष्मी, २. हरि-प्रिया और ३. पद्मा-इन तीन नामों का सदा स्मरण करता रहे और इस 'कवच' का प्रति-दिन प्रातः पाठ करे, तो पाठ-कर्ता स्वस्थ और धन-धान्य से सम्पन्न रहता है।-सं०

विनियोग-ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-कवच-मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-ॐ श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदये, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।।श्रीइन्द्र उवाच।।

समस्त कवचानां तु, तेजस्वि - कधचमुत्तमम्।
आत्म - रक्षणमारोग्यं, सत्यं त्वं बूहि गीष्पते।।१

।।श्रीगुरुरुवाच।।

महा - लक्ष्म्यास्तु कवचं, प्रवक्ष्यामि समासतः।
चतुर्दशसु लोकेषु, रहस्यं ब्रह्मणा पुरा।।२

।।ब्रह्मोवाच।।

शिरो मे विष्णु - पत्नी च, ललाटममृतोद्भवा।
चक्षुषी सु - विशालाक्षी, श्रवणे सागराम्बुजा।।३
घ्राणं पातु वरारोहा, जिह्वामाम्नाय - रूपिणी।
मुखं पातु महा-लक्ष्मीः, कण्ठं वैकुण्ठ-वासिनी।।४
स्कन्धौ मे जानकी पातु, भुजौ भार्गव - नन्दिनी।
बाहू द्वौ द्रविणी पातु, करौ हरि - वराङ्गना।।५
वक्षः पातु च श्रीदेवी, हृदयं हरि - सुन्दरी।
कुक्षिं च वैष्णवी पातु, नाभिं भुवन-मातृका।।६
कटिं च पातु वाराही, सक्थिनी देव - देवता।
ऊरू नारायणी पातु, जानुनी चन्द्र - सोदरी।।७
इन्दिरा पातु जङ्घे मे, पादौ भक्त - नमस्कृता।
नखान् तेजस्विनी पातु, सर्वाङ्गं करुणा - मयी।।८

।।फल-श्रुति।।

ब्रह्मणा लोक - रक्षार्थं, निर्मितं कवचं श्रियः।
ये पठन्ति महात्मनस्ते च धन्या जगत् - त्रये।।९
कवचेनावृताङ्गानां, जनानां जयदा सदा।
कवचेनावृताङ्गानां, कुरु त्वममरेश्वरि!।।१०
भूयः सिद्धिमवाप्नोति, पूर्वोक्तं ब्रह्मणा स्वयम्।
लक्ष्मीर्हरि-प्रिया पद्मा, एतन्नाम - त्रयं स्मरन्।।११
नाम - त्रयमिदं जप्त्वा, स याति परमां श्रियम्।
यः पठेत् स च धर्मात्मा, सर्वान् कामानवाप्नुयात्।।१२

।।श्रीब्रह्म-पुराणे महा-लक्ष्म्याः कवचम्।।

***

श्रीमहा-लक्ष्मी-स्तुति

वन्दे लक्ष्मीं पर-शिव-मयीं शुद्ध-जाम्बूनदाभाम्,
तेजो-रूपां कनक-वसनां सर्व-भूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनक-कलशं हेम-पद्मं दधाना-
माद्यां शक्तिं सकल - जननीं विष्णु - वामाङ्क - संस्थाम्।।१
सुराऽसुरेन्द्रादि-किरीट-मौक्तिकैर्युक्तं सदा यत् तव पाद-पङ्कजम्।
परा वरं पातु वरं सुमङ्गलं, नमामि भक्त्या तव काम-सिद्धये।।२

भवानि त्वं महा-लक्ष्मीः, सर्व-काम-प्रदायिनि!।
सु-पूजिता प्रसन्ना स्यात्, महा-लक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते।।३

श्रीमहा-लक्ष्मी-हृदय-स्तवः

शुक्रवार के दिन रात्रि में प्रस्तुत हृदय-स्तव का सौ बार पाठ करने से पाठ-कर्त्ता धनी होता है। अन्तिम १७ वाँ श्लोक 'फल-श्रुति' का है, जिसे केवल पहली और अन्तिम आवृत्ति में ही पढ़ना चाहिए।–सं०

श्रीमत् - सौभाग्य-जननीं, स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम्।
सर्व - काम - फलावाप्ति - साधनैक - सुखावहाम्।।१
श्री - वैकुण्ठ - स्थिते लक्ष्मि!, समागच्छ ममाग्रतः।
नारायणेन सह मां, कृपा - दृष्ट्यावलोकय।।२
सत्य-लोक-स्थिते लक्ष्मि!, त्वं समागच्छ सन्निधिम्।
वासुदेवेन सहिता, प्रसीद वरदा भव।।३
श्वेत-द्वीप-स्थिते लक्ष्मि!, शीघ्रमागच्छ सुव्रते!।
विष्णुना सहिते देवि!, जगन्मातः! प्रसीद मे।।४
क्षीराब्धि-संस्थिते लक्ष्मि!, समागच्छ स-माधवे!।
त्वत्-कृपा-दृष्टि-सुधया, सततं मां विलोकय।।५
रत्न-गर्भ-स्थिते लक्ष्मि!, परिपूर्ण-हिरण्मयि!।
समागच्छ समागच्छ, स्थित्वा सु - पुरतो मम।।६
स्थिरा भव महा-लक्ष्मि!, निश्चला भव निर्मले!।
प्रसन्ने कमले देवि!, प्रसन्ना वरदा भव।।७
श्री-धरे श्री-महा - भूते!, त्वदन्तस्थ महा - निधिम्।
शीघ्रमुद्धृत्य पुरतः, प्रदर्शय समर्पय।।८
वसुन्धरे श्री - वसुधे, वसु-दोग्ध्रे कृपा - मयि!।
त्वत्-कुक्षि-गतं सर्वं स्वं, शीघ्रं मे त्वं प्रदर्शय।।९
विष्णु - प्रिये!, रत्न - गर्भे!, समस्त-फलदे शिवे!।
त्वत् - गर्भ - गत - हेमादीन्, सम्प्रदर्शय दर्शय।।१०
अत्रोपविश्य लक्ष्मि! त्वं, स्थिरा भव हिरण्मयि!।
सु - स्थिरा भव सु - प्रीत्या, प्रसन्न-वरदा भव।।११

सादरे मस्तकं हस्तं, मम तव कृपयाऽर्पय।
सर्व-राज-गृहे लक्ष्मि!, त्वत्-कला मयि तिष्ठतु।।१२
यथा वैकुण्ठ - नगरे, यथैव क्षीर - सागरे।
तथा मद्-भवने तिष्ठ, स्थिरं श्रीविष्णुना सह।।१३
आद्यादि महा-लक्ष्मि!, विष्णु-वामाङ्क-संस्थिते!।
प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं, रक्ष मां शरणागतम्।।१४
समागच्छ महा-लक्ष्मि!, धन - धान्य - समन्विते!।
प्रसीद पुरतः स्थित्वा, प्रणतं मां विलोकय।।१५
दया सु - दृष्टिं कुरुतां मयि श्रीः।
सुवर्ण - दृष्टिं कुरु मे गृहे श्रीः।।१६

।।फल-श्रुति।।

महा-लक्ष्मीः समुद्दिश्य, निशि भार्गव - वासरे।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा, शत - वारं धनी भवेत्।।१७

***

सिद्धि-लक्ष्मी-स्तुति

आकार-ब्रह्म-रूपेण, ॐ-कारं विष्णुमव्ययम्।
सिद्धि-लक्ष्मि! परा-लक्ष्मि!, लक्ष्य-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।१
याः श्रीः पद्म-वने कदम्ब-शिखरे राज-गृहे कुञ्जरे,
श्वेते चाऽश्व-युते वृषे च युगले यज्ञे च यूपस्थिते।
शङ्खे देव - कुले नरेन्द्र - भुवने गङ्गा - तटे गोकुले,
या श्रीः तिष्ठति सर्वदा मम गृहे भूयात् सदा निश्चला।।२
या सा पद्मासनस्था विपुल-कटि-तटी पद्म-पत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिः स्तन-भर-नमिता शुद्ध-वक्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीः दिव्यैः गजेन्द्रैः मणि-गण-खचितैः स्नापिता हेम-कुम्भैः,
नित्यं सा पद्म-हस्ता वसतु मम गृहे सर्व-माङ्गल्य-युक्ता।।३

श्री महा-लक्ष्मी-पद्धति

'कुल-ज्योति' पं० कन्हैयालाल दीक्षित, काशी के प्रख्यात तान्त्रिक, ज्योतिषी और कौल साधक थे। आपने प्रस्तुत दुर्लभ पद्धति 'चण्डी' में प्रकाशनार्थ सं. २००३ (सन् १९४६) में प्रदान की थी, जो धारावाहिक रूप से अनेक अङ्कों में संस्कृत में प्रकाशित हुई थी। उसी का हिन्दी-रूपान्तर यहाँ भगवती कमला के उपासकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

द्वार-पूजा

सबसे पहले पूजा-गृह को स्वच्छ कर उसे पुष्प मालाओं से सजाए। फिर पूजा-गृह के द्वार को स्वस्तिक, केले के खम्भों, पुष्प-मालाओं आदि से सजाए। फिर आचमन करे और द्वार के सामने देहली के सामने गन्धोदक (लाल चन्दन से मिले जल) से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का एक मण्डल बनाए, उसे मत्स्य-मुद्रा दिखाकर निम्न मन्त्र पढ़कर गन्धाक्षत-पुष्पों से उसका पूजन करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अखण्ड-मण्डलाकारं, विश्व-व्याप्यं व्यवस्थितम्।
त्रैलोक्य - मण्डितं येन, मण्डलं तत् सदा - शिवम्।।
मं मण्डलेशाय नमः।

तब 'फट्' मन्त्र से पात्र को धोकर आधार-सहित उक्त मण्डल पर उसे रखकर निम्न मन्त्र से उसमें शुद्ध जल भरे–

ब्रह्माण्डोदर - तीर्थानि, करैः स्पृष्टानि ते रवे!।
तेन सत्येन मे देव - तीर्थं देहि दिवाकर!।।

फिर उसमें अंकुश-मुद्रा द्वारा सूर्य-मण्डल से निम्न मन्त्र पढ़ते हुए तीर्थों का आवाहन करे–

ॐ गङ्गे! च यमुने! चैव, गोदावरि! सरस्वति!।
नर्मदे! सिन्धु! कावेरि!, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

तब निम्न मन्त्र से गन्धादि द्वारा उसका पूजन करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवति!, अशेष-तीर्थाल-बाले!।
शिव - जटाधिरूढे!, गङ्गे गङ्गाम्बिके! स्वाहा।

फिर पात्र पर हाथ रखकर तीन बार मूल-मन्त्र का जप कर उसे मत्स्य-मुद्रा दिखाए, अवगुण्ठन-मुद्रा से उसे अवगुण्ठित करे, अस्त्र-मुद्रा से उसे रक्षित करे और धेनु-मुद्रा से उसका अमृतीकरण करे। बाँएँ हाथ की अनामा-अंगुष्ठ की तर्पण-मुद्रा से पुष्प द्वारा उसका जल और दाएँ हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ की पूजन-मुद्रा से गन्ध-पुष्प लेकर दोनों हाथों द्वारा एक साथ उसका पूजन-तर्पण करे।

अब पात्रस्थ जल से 'फट्' मन्त्र से बारह बार द्वार का प्रोक्षण कर निम्न मन्त्रों से द्वार के निर्दिष्ट स्थानों में प्रत्यक्ष रूप से अथवा मन-ही-मन क्रमशः पूजा करे। यथा–

द्वारोर्ध्वे (द्वार के ऊपर)–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अविघ्नाय नमः। दक्षे (द्वार के दाहिनी तरफ)–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महा-लक्ष्म्यै नमः। वामे (द्वार के बाँईं तरफ)–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सरस्वत्यै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गण-पतये नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षें क्षेत्र-पालाय नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गङ्गायै नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं यमुनायै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धां धात्र्यै नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विधात्र्यै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं शङ्ख-निधये नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पद्म-निधये नमः। देहल्यां (द्वार की देहली पर)–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हः अस्त्राय फट् अस्त्र-देव्यै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ब्राह्म्यै नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं माहेश्वर्यै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं कौमार्यै नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं वैष्णव्यै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं वाराह्यै नमः। वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं माहेन्द्र्यै नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं चामुण्डायै नमः। वामे–अः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः। द्वार-कपाटयोः दक्षे (द्वार के किवाड़ के दाहिनी तरफ)–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जयाय़ै नमः, द्वार-कपाटयोः वामे (द्वार के किवाड़ के बाँईं तरफ)–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विजयायै नमः।

स्थान-शोधन

इस प्रकार द्वार-पूजा कर निम्न मन्त्र को पढ़कर यह भावना करते हुए कि सभी विघ्न दूर हो गए हैं, जो श्वास चलता हो, उसी पैर को आगे बढ़ाकर पूजा-गृह के भीतर प्रवेश करे–

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमि - संस्थिताः।
ये भूता विघ्न - कर्तारः, ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

पूजा-गृह के भीतर निम्न मन्त्रों से दो पुष्पाञ्जलियाँ 'वास्तु-पुरुष' और 'दीपनाथ' के प्रति अर्पित करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वास्तु-पुरुषाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दीं दीपनाथाय नमः।

उक्त क्रिया के करने में असमर्थ हो, तो केवल निम्न तीन मन्त्रों से गन्धादि द्वारा पूजन करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भद्र-काल्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भैरवाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लम्बोदराय नमः।

अथवा केवल निम्न-लिखित एक ही मन्त्र से पूजा करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वां द्वार-देवताभ्यो नमः।

उक्त संक्षिप्त क्रिया करने पर वास्तु-पुरुष और 'दीप-नाथ' के प्रति केवल नमस्कार करे।

आसन-शोधन

अब निम्न मन्त्र से आसन के स्थान पर जल छिड़के–

फिर अपने **आसन** पर जल छिड़के। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पवित्र-वज्र-भूमे! हुं फट् स्वाहा।

इसके बाद निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ **आसन** के स्थान पर, भूमि पर **अधो-मुख त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्त्र** का मण्डल **रक्त-चन्दन** से बनाए–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आसुरेखे वज्र-रेखे हुं फट् स्वाहा।

तब निम्न मन्त्र से उक्त **मण्डल** का पूजन कर उस पर **आसन** बिछाए–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आधार-शक्त्यै नमः।

फिर **पृथ्वी की प्रार्थना** करते हुए **आसन** पर बैठे। यथा–

भूमि! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि!, पवित्रं कुरु चासनम्।।

कुश, कम्बल, रेशमी वस्त्रादि के आसन पर **पद्मासन** या **स्वस्तिकासन-मुद्रा** से बैठे।

सङ्कल्प

फिर मूल-मन्त्र से **आचमन** और **प्राणायाम** कर निम्न मन्त्रों से **गुरुदेव आदि को प्रणाम** करे–

वामे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुरुभ्यो नमः। दक्षे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः। स्वाग्रे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महा-लक्ष्म्यै नमः।

अब **बाँएँ पैर की एड़ी** से बाँईं ओर भूमि पर तीन बार '**फट्**' मन्त्र से ठोकर मारकर भूमि के, तीन बार नीचे से ऊपर को ताली बजा कर अन्तरिक्ष के विघ्नों को **छोटिका-मुद्रा** (चुटकी बजाते हुए) से दूर कर निम्न **सुदर्शन-मन्त्र** द्वारा **दिग्-बन्धन** करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सहस्त्रार हुं फट्।

इसके बाद **रक्ताक्षत-पुष्प-जल-दूर्वा** से युक्त ताम्रादि-**अर्घ्य-पात्र** को हाथ में लेकर निम्न मन्त्र से तीन बार **मार्तण्ड-भैरव** को **अर्घ्य** प्रदान करे–

ॐ ह्रां ह्रीं सः प्रकाश-शक्ति-सहिताय मार्तण्ड-भैरवाय नमः स्वाहा।

तब **श्री लक्ष्मी-गणेश** का ध्यान कर उनका **मानसोपचारों से पूजन** कर **मूल-मन्त्र का सौ या दस बार जप** कर **जप-फल भगवान् गणेश** को समर्पित कर निम्न मन्त्र से उनकी प्रार्थना करे–

विघ्नेश्वर! नमस्तुभ्यं, भक्ताभीष्ट - फल - प्रदे!।
मया सम्प्रार्थितो विघ्नान्, पूजायां विनिवारय।।

इसके बाद **सङ्कल्प** करे। **सङ्कल्प** के अन्त में निम्न वाक्य की योजना करे–

श्रीपर-देवता-प्रीत्यर्थं यथा-मीलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

शङ्ख-पात्र, श्री-पात्र की स्थापना एवं दीपादि का प्रज्वलन

तदनन्तर **ताम्बूल, जातीपत्र, लौंग, इलायची** और **कपूर**–इन पाँच वस्तुओं से अपने मुख को सुगन्धित कर अपने और देवता के मध्य भाग को **पूर्व दिशा** मानते हुए '**श्रीचक्र**' (देवता के पूजा-यन्त्र)

से बारह अंगुल परिमित स्थान में अपने दाईं ओर आधार-युक्त **शङ्ख-पात्र**, उसके दाईं ओर आधार-युक्त **श्री-पात्र** (स्वर्ण, रजत या काँच का) स्थापित कर दाईं ओर **घृत** का और बाँईं ओर **तैल का दीप लाल बत्ती से युक्त** रखकर उन्हें **मूल-मन्त्र** जप कर जलाए। फिर '**रं**' **बीज** का उच्चारण कर **दीप-शिखा** को स्पर्श कर अपने आगे **धूप-पात्र** रख बाँईं ओर **घण्टा** स्थापित कर उसकी पूजा निम्न मन्त्र से करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जय-ध्वनि मन्त्र-मातः! स्वाहा।

भूत-शुद्धि

तब **घण्टे के बाँईं ओर पुष्पादि और दाईं ओर छत्र, चामरादि** पूजन की सभी सामग्री रख कर **भूत-शुद्धि** करे। यथा–

बिन्दु-अष्टदल-भूपुरात्मक 'श्रीलक्ष्मी-यन्त्र' के प्रति **मूल-मन्त्र** से पुष्पाञ्जलि देकर '**हंस**' मन्त्र से **पिङ्गला नाड़ी** द्वारा भीतर साँस खींचता हुआ निम्न मन्त्र से **मूलाधार-स्थित जीवात्मा** को **सुषुम्णा** के मार्ग से **ब्रह्म-रन्ध्र** में ले जाकर **परम शिव** से एकीभूत करने की भावना कर **इडा नाड़ी** से साँस बाहर निकाले–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूल-शृङ्गारकात् सुषुम्णा-पथेन जीव-शिवं परम-शिव-पदे योजयामि स्वाहा।

इसी प्रकार **पूरक-रेचक-प्राणायाम** द्वारा क्रमशः निम्न मन्त्रों से शोषणादि कर्म करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं सङ्कोच-शरीरं शोषय स्वाहा।

(अपने शरीर को सूखा हुआ सोचे)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं सङ्कोच-शरीरं दह दह पच पच स्वाहा।

(सूखे शरीर को भस्म हुआ सोचे)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं परम-शिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा।

(शरीर की भस्म को सहस्रार के चन्द्र-मण्डल से निकलते अमृत-रस से सींचा हुआ सोचे)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं शाम्भव-शरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहा।

(भस्म से दिव्य शरीर उत्पन्न हुआ सोचे)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं हंसः सोऽहमवतरावतर शिव-पदाज्जीवं सुषुम्णा-पथेन प्रविश मूल-शृङ्गारकमुल्लासोल्लास ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहम् स्वाहा।

(परम शिव से एकीभूत जीव के सुषुम्णा मार्ग से आकर मूलाधार में पुनः स्थित होने की भावना करे)।

प्राण-प्रतिष्ठा एवं न्यास

इस प्रकार भूत-शुद्धि कर अपने हृदय पर दाएँ हाथ की हथेली रख कर 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं सोऽहम्' मन्त्र को तीन बार जपता हुआ प्राण-स्थापना करे।

अब न्यास करे। पहले अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, केशवादि-मातृका कर मूल-षडङ्ग-न्यास से पीठ-न्यास तक करे। लघु-षोढा, गुह्य-षोढा, महा-षोढादि न्यासों को अन्य तन्त्रों से जान ले। मातृका-न्यास की विधि निम्न प्रकार है–

मातृका-न्यास की विधि

प्राणायाम–'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं-आं-इं-ईं-उं-ऊं-ऋं-ॠं-ऌं-ॡं-एं-ऐं-ओं-औं-अं-अः' स्वर-वर्णों से पूरक, 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं-खं-गं-घं-ङं-चं-छं-जं-झं-ञं-टं-ठं-डं-ढं-णं-तं-थं-दं-धं-नं-पं-फं-बं-भं-मं' स्पर्श-वर्णों से कुम्भक और 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं-रं-लं-वं-शं-षं-सं-हं-ळं' अन्तःस्थ वर्णों से रेचक प्राणायाम कर विनियोग पढ़े–

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमातृका-न्यासस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। मातृका-सरस्वती देवता। हलो वीजानि। स्वराः शक्तयः। अव्यक्तं कीलकं। श्रीमहा-लक्ष्मी-पूजनाङ्गत्वे न्यासे विनियोगः।

फिर ऋष्यादि-न्यास करे। यथा–

ऋष्यादि-न्यासः–श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः हृदि। हल-बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वर-शक्तिभ्यो नमः पादयोः। अव्यक्त-कीलकाय नमः नाभौ। श्रीमहा-लक्ष्मी-पूजनाङ्गत्वे न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

तब षडङ्ग-न्यास करे। यथा–

कर-न्यासः–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं-खं-गं-घं-ङं-आं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं-चं-छं-जं-झं-ञं-ईं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं-टं-ठं-डं-ढं-णं-ऊं मध्यमाभ्यां नमः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं-तं-थं-दं-धं-नं-ऐं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं-पं-फं-बं-भं-मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं-यं-रं-लं-वं-शं-षं-सं-हं-ळं-क्षं-अः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यासः–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं-कं-खं-गं-घं-ङं-आं हृदयाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं-चं-छं-जं-झं-ञं-ईं शिरसे स्वाहा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं-ठं-डं-ढं-णं-ऊ शिखायै वषट्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं-थं-दं-धं-नं-ऐं कवचाय हुं, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं-फं-बं-भं-मं औं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं यं-रं-लं-वं-शं-षं-सं-हं-ळं-क्षं-अः अस्त्राय फट्।

अब ध्यान करे। यथा–

व्योमेन्द्वौ रसनार्ण-कर्णिकमचां द्वन्द्वैः स्फुरत्-केशरम्,
पत्रान्तर्गत-पञ्च-वर्ग-यशलार्णादि-त्रि-वर्गं क्रमातम्।

आशास्वस्त्रिषु लान्त-लाङ्गलि-युजा क्षोणी-पुरेणावृतम्,
वर्णाब्जं शिरसि स्थितं, विष-गद-प्रध्वंसि मृत्युञ्जयम्।।१
आधारे लिङ्ग-नाभौ प्रकटित-हृदये तालु-मूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दश-दले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासान्ते वाल-मध्ये डफकठ-सहिते कण्ठ-देशे स्वराणाम्।
हं-क्षं तत्त्वार्थ-रूपं सकल-दल-गतं वर्ण-रूपं नमामि।।२
पञ्चाशद्-वर्ण-भेदैर्विहित-वदन-दोः-पाद-युक् कुक्षि-वक्षो-
देशां भास्वत् कपर्दी कलित-शशि-कलामिन्दु-कुन्दावदाताम्।
अक्ष-स्रक्-कुम्भ-चिन्ता-लिखित-वर-करां त्रीक्षणामब्ज-संस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छ-स्तन-जघन-भरां भारतीं तां नमामि।।३

भगवती महा-लक्ष्मी के कर-कमलों में धारित आयुधों की भावना प्रदक्षिणा-क्रम से दक्षोर्ध्व से दक्षाधः-पर्यन्त करे। तब पञ्चोपचार-पूजन करे। यथा–

लं पृथिव्यात्मिकायै भारत्यै नमः गन्धं कल्पयामि–कनिष्ठागुष्ठ से। हं आकाशात्मिकायै भारत्यै नमः पुष्पं कल्पयामि–तर्जनी-अंगुष्ठ से। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि–तर्जनी-अंगुष्ठ से। रं तैजसात्मकं दीपं दर्शयामि–मध्यमांगुष्ठ से। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि–अनामांगुष्ठ से। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि–सर्वांगुलियों से।

अब तत्त्व-मुद्रा (दक्षानामांगुष्ठ) द्वारा मातृका-वर्णों से न्यास करे। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः–शिरसि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः–मुख-वृत्ते। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं नमः–दक्ष-नेत्रे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं नमः–वाम-नेत्रे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं नमः–दक्ष-कर्णे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं नमः–वाम-कर्णे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं नमः–दक्ष-नासा-पुटे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं नमः–वाम-नासा-पुटे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं नमः–दक्ष-गण्डे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं नमः–वाम-गण्डे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं नमः–ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः–अधरोष्ठे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमः–ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं नमः–अधो-दन्त-पंक्तौ। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः–शिरसि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः नमः–जिह्वायां।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः–दक्ष-बाहु-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं नमः–कूपरे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं नमः–मणि-बन्धे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं नमः–अंगुलि-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नमः–दक्ष-करांगुल्यग्रे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं नमः–वाम-बाहु-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं नमः–वाम-कूपरे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं नमः–मणि-बन्धे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं नमः–करांगुलि-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं नमः–वाम-करांगुल्यग्रे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं नमः–दक्ष-पाद-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं नमः–जानुनि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं नमः–गुल्फे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं नमः–पादांगुलि-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं नमः–दक्ष-पादांगुल्यग्रे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं नमः–वाम-पाद-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं नमः–जानुनि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं नमः–गुल्फे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं नमः–पादांगुलि-मूले। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं नमः–पादांगुल्यग्रे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं नमः–दक्ष-पार्श्वे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं नमः**–वाम-पार्श्वे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं नमः**–पृष्ठे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं नमः**–नाभौ। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं नमः**–जठरे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं नमः–त्वगात्मने हृदये। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं नमः**–असृगात्मने दक्ष-स्कन्धे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः**–मांसात्मने वाम-स्कन्धे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं नमः**–मेदात्मने ककुदि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं नमः–अस्थ्यात्मने हृदयादि-दक्ष-हस्त-पर्यन्तं। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं नमः**–मज्जात्मने हृदयादि वाम-हस्त-पर्यन्तं। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं नमः**–शुक्रात्मने हृदयादि-दक्ष-पादान्तं। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं नमः**–प्राणात्मने हृदयादि-वाम-पादान्तं। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं नमः**–जीवात्मने हृदयादि-गुह्यान्तं। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं नमः**–परमात्मने हृदयादि-शीर्षान्तं।

इस प्रकार '**सृष्टि-मातृका-न्यास**' होता है। एक मत यह भी है कि **विसर्गान्त वर्णों** से अर्थात् '**अः नमः**' **आः नमः**' इत्यादि क्रम से न्यास करे।

इसके बाद '**स्थिति-मातृका-न्यास**' में **दक्ष-गुल्फ** से लेकर **दक्ष-जानु** तक '**ड**' से आरम्भ कर '**ठ**' तक के वर्णों को **विन्दु** और **विसर्ग** से युक्त कर निर्दिष्ट अङ्गों में न्यास करे।

तब '**संहार-मातृका-न्यास**' में '**क्ष**' से आरम्भ कर '**अ**' तक के वर्णों को **विलोम-क्रम** से **विन्दु-युक्त** कर पूर्वोक्त अङ्गों में न्यास करे।

इस प्रकार **सृष्टि, स्थिति, संहार-न्यास** कर पुनः **सृष्टि** और **स्थिति-न्यास** करने से '**मातृका-न्यास**' की विधि पूर्ण होती है।

यदि उक्त **पाँच न्यासों** के करने में समर्थ न हो, तो केवल '**सृष्टि-मातृका-न्यास**' को ही करे। **तीनों न्यासों** ध्यान के उल्लिखित हैं, यथा-स्थान उनका प्रयोग करे।

केशवादि मातृका-न्यास

विनियोग–ॐ केशवादि-मातृका-न्यासस्य श्री साध्य-नारायण ऋषिः। अमृताद्या गायत्री छन्दः। श्री लक्ष्मी-हरिः देवता। श्रीमहा-लक्ष्मी पूजनाङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–श्री साध्य-नारायण-ऋषये नमः शिरसि। अमृताद्या-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। श्री लक्ष्मी-हरि-देवतायै नमः हृदि। श्रीमहा-लक्ष्मी-पूजनाङ्गत्वेन विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
क्लीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रीं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
श्रीं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
क्लीं	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान- शङ्ख-चक्र-गदा - पद्म - कुम्भादर्शाब्ज - पुस्तकम्।
विभ्रतं मेघ - चपला - वर्णं लक्ष्मी - हरिं भजे।।

पञ्चोपचारों से पूजा कर मातृका-न्यास में कथित अङ्गों में क्रमशः निम्न मन्त्रों से न्यास करे। यथा-

ह्रीं श्रीं क्लीं अं केशव-कीर्तिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-ललाटे। ह्रीं श्रीं क्लीं आं नारायण-कान्तिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-मुख-वृत्ते। ह्रीं श्रीं क्लीं इं माधव-तुष्टिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष नेत्रे। ह्रीं श्रीं क्लीं ईं गोविन्द-पुष्टिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम नेत्रे। ह्रीं श्रीं क्लीं उं विष्णु-धृतिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष कर्णे। ह्रीं श्रीं क्लीं ऊं मधु-सूदन-शान्तिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम कर्णे। ह्रीं श्रीं क्लीं ऋं त्रिविक्रम-क्रियाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष नासायाम्। ह्रीं श्रीं क्लीं ॠं वामन-दयाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम नासायाम्। ह्रीं श्रीं क्लीं ऌं श्रीधर-मेधाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष गण्डे। ह्रीं श्रीं क्लीं ॡं हृषीकेश-हर्षाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम गण्डे। ह्रीं श्रीं क्लीं एं पद्म-नाभ-श्रद्धाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-ऊर्ध्व ओष्ठे। ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दामोदर-लज्जाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-अधो ओष्ठे। ह्रीं श्रीं क्लीं ओं वासुदेव-लक्ष्मीभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ। ह्रीं श्रीं क्लीं औं सङ्कर्षण-सरस्वतीभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-अधो दन्त-पंक्तौ। ह्रीं श्रीं क्लीं अं प्रद्युम्न-प्रीतिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-शिरसि। ह्रीं श्रीं क्लीं अः अनिरुद्ध-रतिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-मुखे।

ह्रीं श्रीं क्लीं कं चक्री-जयाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष बाहु-मूले। ह्रीं श्रीं क्लीं खं गदी-दुर्गाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष कूपरे। ह्रीं श्रीं क्लीं गं शार्ङ्गी-प्रभाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष मणि-बन्धे। ह्रीं श्रीं क्लीं घं खड्गी-सत्याभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष कर-तले। ह्रीं श्रीं क्लीं ङं शङ्खी-चण्डाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष कराग्रे।

ह्रीं श्रीं क्लीं चं हली-वाणीभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम बाहु-मूले। ह्रीं श्रीं क्लीं छं मुशली-विलासिनीभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम कूपरे। ह्रीं श्रीं क्लीं जं शूली-विजयाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम मणि-बन्धे। ह्रीं श्रीं क्लीं झं पाशी-विरजाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम कर-तले। ह्रीं श्रीं क्लीं ञं अंकुशी-विश्वाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम कराग्रे।

ह्रीं श्रीं क्लीं टं मुकुन्द-विनयाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्षोरु-मूले। ह्रीं श्रीं क्लीं ठं नन्दज-सुनन्दाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष जानुनि। ह्रीं श्रीं क्लीं डं नन्दी-सत्याभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष गुल्फे। ह्रीं श्रीं क्लीं ढं नर-ऋद्धिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष पाद-तले। ह्रीं श्रीं क्लीं णं नरकजित्-समृद्धिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-दक्ष पादाग्रे।

ह्रीं श्रीं क्लीं तं हरि-शुद्धिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वामोरु-मूले। ह्रीं श्रीं क्लीं थं कृष्ण-बुद्धिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम जानुनि। ह्रीं श्रीं क्लीं दं सत्य-मुक्तिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम गुल्फे। ह्रीं श्रीं क्लीं धं सात्वत-मतिभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम पाद-तले। ह्रीं श्रीं क्लीं नं शौरि-क्षमाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं-वाम पादाग्रे।

ह्रीं श्रीं क्लीं पं शूर-रमाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं–दक्ष पार्श्वे। **ह्रीं श्रीं क्लीं फं जनार्दन-उमाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–वाम पार्श्वे। **ह्रीं श्रीं क्लीं बं भूधर-क्लेदिनीभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–पृष्ठे। **ह्रीं श्रीं क्लीं भं विश्वमूर्ति-क्लिन्नाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–नाभौ। **ह्रीं श्रीं क्लीं मं वैकुण्ठ-वसुन्धराभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–जठरे।

ह्रीं श्रीं क्लीं यं पुरुषोत्तम-वसुदाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं–त्वगात्मने नमः हृदि। **ह्रीं श्रीं क्लीं रं बली-पराभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–असृगात्मने नमः दक्षांशे। **ह्रीं श्रीं क्लीं लं बलानुज-परायणाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–मांसात्मने नमः ककुदि। **ह्रीं श्रीं क्लीं वं बाल-सूक्ष्माभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–मेदात्मने नमः वामांशे।

ह्रीं श्रीं क्लीं शं वृषघ्न-सन्ध्याभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं–अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्ष करांगुल्यन्तम्। **ह्रीं श्रीं क्लीं षं वृष-प्रज्ञाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–मज्जात्मने नमः हृदादि वाम करांगुल्यन्तम्। **ह्रीं श्रीं क्लीं सं हंस-प्रभाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्। **ह्रीं श्रीं क्लीं हं वराह-निशाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्। **ह्रीं श्रीं क्लीं ळं विमल-अमोघाभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ। **ह्रीं श्रीं क्लीं क्षं नृसिंह-विद्युताभ्यां नमः क्लीं श्रीं ह्रीं**–ज्ञानात्मने नमः हृदादि मुखे।

इस प्रकार **मातृका-न्यास** कर **श्रीमहा-लक्ष्मी** के **मूल-मन्त्र** के **विनियोगादि** करे। यथा–

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-मन्त्रस्य श्रीभृगु ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता। शं बीजं। रं शक्तिः। ईं कीलकं। ममेह जन्मनि श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे (प्रीत्यर्थे वा) न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–श्रीभृगु-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदये। शं बीजाय नमः गुह्ये। रं शक्तये नमः पादयोः। ईं कीलकाय नमः नाभौ। ममेह जन्मनि श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे (प्रीत्यर्थे वा) न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

	कर-न्यास	**अङ्ग-न्यास**
श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
श्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
श्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
श्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
श्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

अब **पीठ-न्यास** करे। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं मण्डूकाय नमः मूलाधारे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कां कालाग्नि-रुद्राय नमः** स्वाधिष्ठाने। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कच्छपाय नमः** हृदये। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आधार-शक्तये नमः** हृदये। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं**

कूं कूर्माय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं धरायै नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षीं क्षीर-सिन्धवे नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्वें श्वेत-दीपाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कल्प-वृक्षाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं मणि-हर्म्याय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हें हेम-पीठाय नमः हृदये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं धर्माय नमः दक्षांसे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांसे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैं वैराग्याय नमः वामोरौ। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अधर्माय नमः मुखे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अज्ञानाय नमः वाम-पार्श्वे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अवैराग्याय नमः नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अनैश्वर्याय नमः दक्ष-पार्श्वे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अनन्ताय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं चतुर्विंशति-तत्त्वेभ्यो नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पद्माय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आनन्द मय-कन्दाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं संविन्नालाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विकार-मय-केसरेभ्यो नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रं प्रकृत्यात्मक-पत्रेभ्यो नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पञ्चाशद्-वर्णाढ्य-तत्त्व-कर्णिकायै नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सूं सूर्य-मण्डलाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सों सोम-मण्डलाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अग्नि-मण्डलाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सत्त्वाय नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रजसे नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं तमसे नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आत्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अन्तरात्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परमात्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञां ज्ञानात्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मां माया-तत्त्वात्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कला-तत्त्वात्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विद्या-तत्त्वात्मने नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पर-तत्त्वात्मने नमः हृदये।

इसके बाद हृदय में अष्ट-दल की भावना कर उसके मध्य में और पूर्वादि चारों दिशाओं में पूर्व-वत् निम्न मन्त्रों से पीठ-शक्तियों का न्यास करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विभूत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उन्नत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कां कान्त्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सृं सृष्ट्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कीं कृत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सन्नत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुं पुष्ट्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उत्कृष्ट्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ऋद्ध्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं सर्व-शक्ति-कमलासनाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं महा-लक्ष्मी-अमृत-चैतन्य-मूर्त्यै नमः।

अब भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान करे। यथा–

ध्यान

कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिमि-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,
हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानां श्रियम्,
विभ्राणां वरमब्ज-युतमभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-ललितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।

इस प्रकार ध्यान कर मानसोपचारों से महा-लक्ष्मी की पूजा करे। यथा–

मानस-पूजन

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्री महा - लक्ष्मी - पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्री महा - लक्ष्मी - पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्री महा - लक्ष्मी - पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्री महा - लक्ष्मी - पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्री महा - लक्ष्मी - पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्री महा - लक्ष्मी - पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।

तब 'ॐ श्रीं अं नमः' से प्रारम्भ कर 'ळं' तक ५० वर्णों से युक्त कर, फिर 'ळं' से 'अ'-कार तक विलोम-क्रम से और अन्त में 'अ-क-च-ट-त-प-य-श' वर्णों से युक्त कर १०८ बार मूल-मन्त्र का जप करे। जप के बाद 'गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं०' इत्यादि मन्त्र से जप को समर्पित करे। इसके बाद 'पात्र-स्थापना' करे। यथा–

पात्र स्थापना

(१) सामान्यार्घ्य-पात्र

शङ्ख के नीचे मत्स्य-मुद्रा से 'वृत्त-चतुरस्त्र' का मण्डल बनाए। उसके आग्नेयादि चार कोणों, मध्य और दिशाओं में गन्धाक्षत-पुष्प से षडङ्गों की पूजा कर 'फट्' से त्रिपदिका को लेकर 'नमः' से मण्डल पर रखकर निम्न मन्त्र से पूजा करे–

ॐ मं धर्म-प्रद-दश-कलात्मने वह्नि-मण्डलाय श्रीमहा-लक्ष्म्यम्बायाः सामान्यार्घ्य-पात्राधाराय नमः।

उस त्रि-पद पर शङ्ख को रखकर निम्न मन्त्र से पूजा करे–

ॐ अं अर्थ-प्रद-द्वादश-कलात्मने सूर्य-मण्डलाय श्रीमहा-लक्ष्म्यम्बायाः सामान्यार्घ्य-पात्राय नमः।

तब 'क्ष' से 'अ' तक के विन्दु-युक्त मातृका-वर्णों और मूल-वीज-मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से पात्र को भरे तथा निम्न मन्त्र से उसका पूजन करे–

ॐ उं काम-प्रद षोडश-कलात्मने सोम-मण्डलाय नमः।

फिर अंकुश मुद्रा द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थों का आकर्षण करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्माण्डोदर-तीर्थानि, जलैः स्पृष्टानि ते रवे!।
तेन सत्येन मे देव!, तीर्थं देहि दिवाकर!।।

निम्न मन्त्र से तीर्थों का आवाहन पात्रस्थ जल में करे–

ॐ गङ्गे! च यमुने! चैव, गोदावरि! सरस्वति!।
नर्मदे! सिन्धु! कावेरि!, जलेऽस्मिन् सन्निधा भव।।

फिर निम्न मन्त्र से **प्रणाम** करे–

ॐ नमो भगवति! अशेष-तीर्थालबाले गङ्गे गङ्गात्मिके! स्वाहा।

तब '**हुं**' से अवगुण्ठन, '**क्षिप् ॐ स्वाहा**' से **ताक्ष्यं-मुद्रा** द्वारा निर्विषीकरण, '**फट्**' से संरक्षण कर पात्र को **धेनु** और **योनि-मुद्राएँ** दिखाकर उसे **मूल-मन्त्र** से आठ बार अभिमन्त्रित करे। इस प्रकार स्थापित '**सामान्यार्घ-पात्र**' से आचमनी द्वारा जल लेकर **पूजा-गृह** में चारों ओर छिड़के।

(२) श्री-पात्र

स्थापना के स्थान पर **मण्डल** बनाकर **अङ्ग-पूजा** तक करे। फिर **आधार** को रख **वह्नि-मण्डल** की पूजा कर **प्रदक्षिणा-क्रम** से **वह्नि की दस कलाओं का पूजन** निम्न मन्त्रों से करे। यथा–

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः। २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्मायै नमः। ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिन्यै नमः। ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिन्यै नमः। ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रियै नमः। ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपायै नमः। ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलायै नमः। ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं हव्यवहायै नमः। १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवहायै नमः।

तब '**फट्**' से पात्र को धोकर '**नमः**' से उसे स्थापित कर निम्न मन्त्र से उसकी पूजा करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अर्थ-प्रद-द्वादश-कलात्मने सूर्य-मण्डलाय श्रीमहा-लक्ष्म्यम्बायाः श्रीपात्राय नमः।

तब पूर्व-वत् निम्न मन्त्रों से **सूर्य की बारह कलाओं की पूजा** करे–

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनी-कलायै नमः। २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिनी-कलायै नमः। ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रा-कलायै नमः। ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीचि-कलायै नमः। ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिनी-कलायै नमः। ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुचि-कलायै नमः। ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्णा-कलायै नमः। ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदा-कलायै नमः। ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वा-कलायै नमः। १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिनी-कलायै नमः। ११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिणी-कलायै नमः। १२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमा-कलायै नमः।

अब निम्न मन्त्र से **पुष्पाञ्जलि** देकर पात्र में **भगवती का आवाहन** करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं महा-लक्ष्मि ईश्वरि परम-स्वामिनि ऊर्ध्व-शून्य-प्रवाहिनि सोम-सूर्याग्नि-भक्षिणि परमाकाश-भासुरे! आगच्छ आगच्छ, विश विश, पात्रं प्रति-गृह्ण प्रति-गृह्ण, हुं फट् स्वाहा।

अब **विलोम-मातृका** और **मूल-मन्त्र** से पात्र को अमृत से भरे और उसमें **द्वितीय, तृतीय तत्त्वों के खण्ड** और **गन्ध-लिप्त पुष्प** छोड़कर उसमें निम्न मन्त्र से पूजा करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं काम-प्रद-षोडश-कलात्मने सोम-मण्डलाय श्रीमहा-लक्ष्मी-पात्रामृताय नमः।

अब पूर्व-वत् निम्न मन्त्रों से **सोम की सोलह कलाओं की पूजा** करे–

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृता-कलायै नमः। २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदा-कलायै नमः। ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषा-कलायै नमः। ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टि-कलायै नमः। ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टि-कलायै नमः। ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रति-कलायै नमः। ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृति-कलायै नमः। ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनी-कलायै नमः। ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं चन्द्रिका-कलायै नमः। १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं कान्ति-कलायै नमः। ११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्ना-कलायै नमः। १२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्री-कलायै नमः। १३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीति-कलायै नमः। १४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदा-कलायै नमः। १५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णा-कलायै नमः। १६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृता-कलायै नमः।

श्री-पात्र के अमृत में अपने आगे से प्रदक्षिण-क्रम से अकथादि सोलह वर्णात्मक त्रिकोण की भावना कर उसके कोणों में 'हं-ळं-क्षं' की कल्पना कर उसके विन्दु में तुरीय-स्वर-गर्भित श्री-बीज का ध्यान करे। फिर उसके बाँएँ और दाएँ ओर 'हं-सः' की कल्पना कर उसके ऊपर वृत्त और मातृका-मय अष्ट-दल की भावना कर उसके ऊपर मातृका-मय भू-पुर का ध्यान करे। षडङ्ग-मन्त्रों से षडङ्ग-युवतियों की पूजाकर 'नमः स्वाहा' से सुधा-देवी की पूजा कर आचमनी से अर्घ्य-पात्र का कुछ अमृत लेकर 'वौषट्' से उसमें छोड़े और 'हुं' से अवगुण्ठन, 'वौषट्' से धेनु-मुद्रा द्वारा अमृतीकरण, 'फट्' से संरक्षण, 'नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर गालिनी-मुद्रा दिखाए तथा योनि-मुद्रा से नमस्कार कर उस पर आठ बार मूल-मन्त्र का जप करे।

इसके बाद पात्र पर हाथ रखकर निम्न मन्त्रों को पढ़े–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वर-सद्-ऋत सद्-व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।
तद्-विप्रासो विपण्यवो, जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत् परमं पदम्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुर्योनिं कल्पयतु, त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रज्ञा-पतिर्धाता गर्भं दधातु वै।
गर्भं धेहि सिनीवालि!, गर्भं धेहि सरस्वति!
गर्भं धेह्य अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर-स्रजा।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अखण्डैक-रसानन्द-करे पर-सुधात्मनि!।
स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र, निधेह्यकुल-रूपिणि!।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अकुलास्थामृताकारे, सिद्धि-ज्ञान-करे परे!।
अमृतत्त्वं निधेह्यस्मिन्, वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद्-रूपिण्यैक-रस्यं त्वं, कृत्वार्ध्ये चित्-स्वरूपिणि!।
भूत्वा परामृताकारे, मयि चित्-स्फुरणं कुरु।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृत-वर्षिणि! अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

पीठ-पूजा

उक्त प्रकार पात्र-स्थापन कर अपने आगे पीठ पर स्थापित श्रीलक्ष्मी-यन्त्र में, जो विन्दु-अष्ट-दल-भूपुर से युक्त हो या गो-मुख मूर्ति में, कलश में, दीप-शिखा में या अपने सिर पर पूर्व-वत् निम्न मन्त्रों से पीठ-देवताओं की पूजा गन्धाक्षत-पुष्पों से करे। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं मण्डूकाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कां कालाग्नि-रुद्राय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कच्छपाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आधार-शक्त्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कूं कूर्माय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं धरायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षीं क्षीर-सिन्धवे नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रें प्रेत-दीपाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कल्प-वृक्षाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं मणि-हर्म्याय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हें हेम-पीठाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं धर्माय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञां ज्ञानाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैं वैराग्याय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐश्वर्याय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अधर्माय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अज्ञानाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अवैराग्याय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अनैश्वर्याय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अनन्ताय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं चतुर्विंशति-तत्त्वेभ्यः नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पद्माय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आनन्द-मय-कन्दाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं संविन्नालाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विकार-मय-केसरेभ्यः नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रं प्रकृत्यात्मक-पत्रेभ्यः नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पञ्चाशद्-वर्णाढ्य-तत्त्व-कर्णिकायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सूं सूर्य-मण्डलाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सों सोम-मण्डलाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वह्नि-मण्डलाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सत्त्वाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रजसे नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं तमसे नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आत्मने नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अन्तरात्मने नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परमात्मने नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञां ज्ञानात्मने नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मां माया-तत्त्वाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कला-तत्त्वाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विद्या-तत्त्वाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पर-तत्त्वाय नमः।

वहीं विन्दु में अष्ट-दल की भावना कर उसके पूर्वादि में प्रादक्षिण्य-क्रम से और मध्य में निम्न मन्त्रों से पूर्व-वत् पूजा करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विभूत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उन्नत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कां कान्त्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सृं सृष्ट्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कीं कीर्त्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सन्नत्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुं पुष्ट्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उत्कृष्ट्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ऋद्ध्यै नमः। मध्ये–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं सर्व-शक्ति-कमलासनाय नमः।

संविदा-ग्रहणादि

इस प्रकार पीठ-पूजा कर संविदा को आठ बार मूल-मन्त्र से अभिमन्त्रित कर निम्न प्रकार प्रार्थना करे–

संविदे! ब्रह्म - सम्भूते!, ब्रह्म - पुत्रि! सदाऽनघे!।
भैरवाणां च तृप्त्यर्थं, पवित्रा भव सर्वदा।।

फिर उसे देवी को अर्पित कर स्वयं भी '**मूलं स्वाहा**' से अपनी आत्माग्नि में उसकी आहुति दे। सामयिकों अर्थात् उपस्थित साधकों को भी उसे दे। एक मत यह है कि संविदा-ग्रहण की यह क्रिया द्वार-पूजन के ही बाद कर लेनी चाहिए।

अब विशेषार्घ्यामृत से आचमनी द्वारा अन्य पात्र में द्रव्य लेकर गुरूपदेश के अनुसार अपने सिर पर निम्न मन्त्रों से तीन-तीन बार पुष्प-मुद्रा से गन्धाक्षत-पुष्प-द्वारा पूजन और तत्त्व-मुद्रा से तर्पण करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह-स-क्ष-म-ल-व-र-यूं आनन्द-भैरवाय वषट् आनन्द-भैरव-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स-ह-क्ष-म-ल-व-र-यीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् आनन्द-भैरवी-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।।

इसी प्रकार गुरु-परम्परा से प्राप्त श्रीशिवादि स्व-गुरु आदि का तीन-तीन बार पूजन-तर्पण कर अपने हृदय में षडङ्गावरण-सहित देवी महा-लक्ष्मी का तीन बार पूजन-तर्पण कर आत्म-पादुका-मन्त्र से मूलाधार में एक बार तर्पण कर अपनी आत्मा में मातृका-मयी ज्योति की भावना कर निम्न मन्त्र से उसे आत्माग्नि में आहुति प्रदान करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि, ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि, योऽहमस्मि, सोऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि, अहमेवाहं, मां जुहोमि स्वाहा।

इष्ट-देवता का आवाहनादि

अब ताम्बूल खाकर मूल-मन्त्र से पद्म-मुद्रा द्वारा एक पुष्प लेकर उसमें देवी का आवाहन करे। पहले मूलाधार से ब्रह्म-रन्ध्र तक व्याप्त, विस-तन्तु समान सूक्ष्म शरीरवाली, विद्युत्-पुञ्ज जैसी चमकीली, सैकड़ों सुधा-किरणों के समान शीतल तेजो-दण्ड-स्वरूपिणी परा-चिति की भावना करे। फिर हृदय में श्रीलक्ष्मी-यन्त्र की भावना कर ध्यानोक्त रूपवाली महा-लक्ष्मी को उस यन्त्र में विराजमान ध्यान कर उनकी मानस-पूजा करे। तब तेजो-रूपा, अपनी आत्मा से अभिन्न उन महा-लक्ष्मी देवी को सुषुम्ना-मार्ग से उठाकर चलायमान नासा-पुट से अपनी अञ्जलि में स्थित पुष्प में ले आने की भावना करे और–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्याः अमृत-चैतन्य-मूर्तिं कल्पयामि।

यह मन्त्र उच्चारण करते हुए अपनी लीला से सुन्दर शरीर धारण करती हुई भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान करे। फिर निम्न मन्त्र से उन पर-देवता को पूजा-यन्त्र के विन्दु-पीठ में श्रीनारायणाङ्क में प्रतिष्ठित कर मूल-मन्त्र से आवाहन, संस्थापन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण, अवगुण्ठन,

वन्दन, धेनु और योनि-मुद्राएँ दिखाए। तब चौंसठ उपचारों से पर-देवता का पूजन करे। वैसा करने में असमर्थ हो, तो सामान्यार्घ्य का थोड़ा-सा जल लेकर अम्बा-चरणों में अर्पित करने की भावना करते हुए अन्य पात्र में छोड़े। अथवा पुष्प-अक्षत अर्पित करे। आभूषण, चन्दनादि-लेप मण्डप के अन्दर ही कर्तव्य है। प्रत्येक उपचार के अर्पण करने में चतुस्तार-सहित (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) मूल-मन्त्र का उच्चारण करे। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै पाद्यं कल्पयामि नमः।

इसी प्रकार अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पुनराचमनीय प्रदान कर सहस्त्र, शत या सात बार पूर्वोक्त विधि से तर्पण-पूजन कर तीन बार निम्न मन्त्र पढ़ते हुए लेलिहान-मुद्रा द्वारा प्राण-स्थापन करे–

प्राण-प्रतिष्ठा–आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महा-लक्ष्मी प्राणाः इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महा-लक्ष्मी जीव इह स्थितः। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महा-लक्ष्मी सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महा-लक्ष्मी वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाद-पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

तब मूल-मन्त्र से पद्म-मुद्रा और वराभय-मुद्राएँ दिखाकर उपचारों से पूजन करे। यथा–

१. आभूषणों का अवरोपण, २. सुगन्ध-तैल का अभ्यङ्ग, ३. मज्जन-शाला में प्रवेशन, ४. मज्जन-मण्डप में मणि-पीठ पर उपवेशन, ५. दन्त-धावन, ६. उष्णोदक-स्नान, ७. श्रीसूक्त-पुरुष-सूक्त से सुवासिनियों द्वारा लाए स्वर्ण-कलश से निकले सभी तीर्थों के जल से अभिषेक, ८. धुले हुए सूक्ष्म वस्त्र से केश और अङ्गों का मार्जन, ९. ऋतु-काल में उत्पन्न या अतसी कुसुम वस्त्र-धारण, १०. हरी कञ्चुकी और ११. रक्त-वस्त्रोत्तरीय-धारण, १२. आलेप-मण्डप-प्रवेशन, १३. कस्तूरी, सुगन्धित, कज्जलादि सौभाग्य-वस्त्र-धारण, १४. केश-भार को कालागरु-धूपन, १५. भूषण-मण्डप-प्रवेशन, १६. वहाँ मणि-पीठ पर उपवेशन, १७. पदांगुलीय, रत्न-कटक, नूपुर, कटि-सूत्र, सौभाग्याभरण, काञ्चीदाम, ऊर्मिकावलि, वलयावलि, मणि-कङ्कण, वीटिका, अंगुलीयक, केयूर-चतुष्टय, कर्णाभूषण, कण्ठ-सूत्र, पदक, महा-पदक, मुक्तावलि, एकावलि, हीरावलि, नासिका-भूषण, तिलक-रत्न, मौक्तिकालक, शिरोभूषण, चन्द्र-शकल, नव-मणि-मुकुट, चूड़ामणि, पैरों तक पहुँचती नव-रत्न-मण्डित मुक्तावलि, दोनों हाथों में कमल और ऋतु-काल के उपयुक्त आभूषणों से अलङ्करण, दो माणिक्य-पादुकाएँ धारण-पूर्वक समान-वेष-भूषावाली सखियों सहित याग-भूमि में आगमन और श्री-पीठ में नारायणाङ्क में उपवेशन।

उक्त प्रकार भावना से पूजन करता हुआ अमृतासव से पूर्ण चषक (पात्र) और कर्पूर-युक्त ताम्बूल-वीटिका की कल्पना करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतासव-चषकं कल्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कर्पूर-वीटिकां कल्पयामि नमः।

कर्पूर-वीटिका का लक्षण निम्न प्रकार है–

एला-लवङ्ग-कर्पूर-कस्तूरी-केसरादिभिः। जातीफल-दलैः पूगैः लाङ्गल्यूषण-नागरैः। चूर्णैः खादिर-सारैश्च युक्ता कर्पूर-वीटिका।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गन्धं कल्पयामि नमः।

गन्ध का लक्षण निम्न प्रकार है–

कुंकुम-गोरोचन-कस्तूरि-कर्पूर-श्वेत-कृष्ण-रक्त-चन्दन-ह्रींवेर-युतं चेति।

पुष्पों का लक्षण निम्न प्रकार है–

ऋतु-कालोद्भवं पुष्पं नाना-गन्ध-युतं चम्पक-पद्म-बिल्व-पत्र-शत-पत्र-मल्लिका-जाती-पत्र-पुन्नाग-पारिजात-पाटलादिभिश्च।

उक्त पुष्पों द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि और पुष्प-माला निम्न मन्त्र से प्रदान करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इमानि पुष्पाणि वौषट्।

दशाङ्ग धूप का लक्षण निम्न प्रकार है–

श्वेत - कृष्णागरु - लाक्षा - गुग्गुलुश्चन्दनं घृतम्।
मधु - बिल्व - फलं सर्जः, कर्पूरश्च दशाङ्गकम्।।

उक्त दशाङ्ग-धूप को निम्न मन्त्र से प्रदान करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै धूपमाघ्रापयामि नमः।

दीप-पात्र को गो-घृत या तैल से भरकर कर्पूर-वर्तिका से युक्त करे। उसे माया (ह्रीं) बीज से जलाकर 'गन्धं-पुष्पं नमः' से उसकी पूजा करे और तब दीप-मुद्रा से उसे भगवती को निम्न मन्त्र से दिखाए–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै दीपं दर्शयामि नमः।

अब देवी के आगे और अपनी बाँईं ओर पूर्व-वत् मण्डल बनाकर, उसकी पूजा कर, उस पर आधार-सहित नैवेद्य-पात्र को रखे, जो पायसान्नादि अपने को प्रिय अन्न और फलों से युक्त हो। मूल-मन्त्र से नैवेद्य का प्रोक्षण कर, 'वं' बीज से धेनु-मुद्रा द्वारा उसका अमृती-करण कर उसे मूल-मन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करे। तब गन्ध-पुष्प से उसका पूजन कर निम्न मन्त्रों से उसे अर्पित करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै नैवेद्यं निवेदयामि स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै नैवेद्याङ्गत्वेन पाद-प्रक्षालनम्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै नैवेद्याङ्गत्वेन ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। मूलं आत्म-तत्त्व-व्यापिका श्रीमहा-लक्ष्मी-मातः तृप्यतु।

मूलं विद्या-तत्त्व-व्यापिका श्रीमहा-लक्ष्मी-मातः तृप्यतु।

मूलं शिव-तत्त्व-व्यापिका श्रीमहा-लक्ष्मी-मातः तृप्यतु।

मूलं सर्व-तत्त्व-व्यापिका श्रीमहा-लक्ष्मी-मातः तृप्यतु।

इस प्रकार यह भावना करे कि भगवती नैवेद्य ग्रहण कर रही हैं। निम्न मन्त्रों से आगे के उपचार प्रदान करे–

चित्-पात्रे सद्धविः सौख्यं, विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि ते देवि!, सानुगायै जुषाण तत्।

मूलं मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। मूलं उत्तरापोशनं समर्पयामि। मूलं हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। मूलं मुख-प्रक्षालनं समर्पयामि। मूलं पाद-प्रक्षालनं समर्पयामि। मूलं आचमनीयं समर्पयामि। मूलं फलं समर्पयामि। मूलं ताम्बूलं समर्पयामि।

आरार्तिक–अब आरती करने के लिए स्वर्णादि-पात्र में अष्ट-दल-कमल की भावना कर उसे रत्न, पुष्प, फलों से पूर्ण कर उसके ऊपर मध्य में नौ या पाँच बत्तियों या एक ही बत्ती से युक्त और घृत-कर्पूर से पूरित दीप-पात्र रखे। 'ह्रीं' से उसे जलाकर निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करे–

श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं नव-रत्नाय श्रीं ह्रीं न्लूं प्लूं म्लूं स्लूं ग्लूं ह्रीं श्रीं।

तब गन्ध-पुष्प से उसकी पूजा कर घण्टादि वाद्यों को बजाते हुए तीन बार उसे निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए घुमाए–

ॐ समस्त-चक्र-चक्रेशी-युते देवि समुद्रजे!
आरार्तिकमिदं तुभ्यं, गृहाण हरि-वल्लभे!।।

फिर घुटनों के बल भूमि पर बैठकर उस पात्र को मस्तक तक उठाते हुए निम्न मन्त्र से आरार्तिक को समर्पित करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः मङ्गलारार्तिकं समर्पयामि।

आवरण-पूजन

पहले भगवती को तीन बार पुष्पाञ्जलि देकर निम्न मन्त्र से आवरण-पूजन हेतु अनुमति माँगे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संविन्मये परे देवि!, परामृत-चरु-प्रिये!
क्षीराब्धिजे! देह्यनुज्ञां, परिवारार्चनाय मे।।

(१) योनि-मुद्रा से प्रणाम कर पूर्व-वत् तीन बार देवता का तर्पण करे। तब देवता के पीछे तीन रेखाओं की भावना कर वहाँ निम्न प्रकार गुरु-पंक्ति का ध्यान करे–

कराभ्यां चिन्मुद्रा स - मधु - नृ - कपालं च दधतीम्,
द्रुत - स्वर्ण - प्रख्यामरुण - कुसुमालेप - वसनाम्।
कृपा - पूर्णापाङ्गीमरुण - नयनां बर्बर - कचा–
मुपेतां तिस्रौधैर्यजत - गुरु - पंक्तिं कृत - मतिः।।

गुरु-पादुका-मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर पूर्व-वत् तत्त्व-मुद्रा द्वारा श्रीपात्र से बाँएँ हाथ से तर्पण और पुष्प-मुद्रा द्वारा दाएँ हाथ में लिए गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन निम्न मन्त्रों से करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सिद्धौघेभ्यः परापर-गुरुभ्यो नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं मानवौघेभ्यः अपर-गुरुभ्यो श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं शिवादि-स्व-गुरु-परम्परा श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं (पादुकया) स्व-गुरु श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

फिर अपने आगे पूर्व, देवी के पीछे पश्चिम, अपने बाँएँ दक्षिण और अपने दाएँ उत्तर दिशा की कल्पना कर निम्न मन्त्रों से षडङ्गों का पूजन-तर्पण करे–

आग्नेये ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं हृदयाय नमः हृदय-देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईशाने ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा शिरो-देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। नैर्ऋत्ये ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रूं शिखायै वषट् शिखा-देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। वायव्ये ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रैं कवचाय हुं कवच-देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पुरतः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नेत्र-त्रयाय वौषट् नेत्र-देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। सर्वत्र ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रः अस्त्राय फट् अस्त्र-देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

तब षडङ्ग-देवियों का ध्यान निम्न प्रकार करे–

दिव्याम्बर-धराः देवी-समानाकारा पद्म-द्वय-वराभय-कराः।

फिर 'मूलं श्रीमहा-लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि नमः' से तीन बार पूजन कर गन्धोदक लेकर उसे निम्न मन्त्र से देवी के चरणों में अर्पित करे–

एताः षडङ्ग-युवतयः स-मुद्राः सायुधाः स-शक्तयः स-वाहनाः स-परिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु।

तब निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमहा-लक्ष्मि!
अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, प्रथमावरणार्चनम्।।

(२) पूजा-यन्त्र के अष्ट-दल पद्म को निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अष्ट-दल-पद्माय नमः।

फिर निम्न मन्त्रों से पूर्व-वत् निर्दिष्ट दलों में वासुदेवादि का पूजन-तर्पण करे। यथा–

पूर्व-दले-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वासुदेवाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। दक्षिणे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सङ्कर्षणाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। पश्चिमे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रद्युम्नाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। उत्तरे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनिरुद्धाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

तब वासुदेवादि देवों का ध्यान निम्न प्रकार करे–

हिम - पीत - तमालेन्द्र - नीलाभाः पीत - वाससः।
शङ्ख - चक्र - गदा - पद्म - धारिणश्च चतुर्भुजाः।।

अब दमकादि चार हाथियों का पूर्व-वत् पूजन-तर्पण करे–

आग्नेये–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दमकाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

नैऋत्ये–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सलिलाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

वायव्ये–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुग्गुलाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

ईशाने–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुरुण्डकाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

उक्त हाथियों का ध्यान निम्न प्रकार करे–

रजत - प्रभाः हेम - कुम्भ - सुधामृत - भरिताः।
वस्त्राभरण - माल्यादिभिः पूजिताः ध्यातव्याः।।

फिर अपनी बाँईं ओर देवी के बगल में 'वसु-धारा-सहिताय शं शङ्ख-निधये नमः श्री पादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः' और दाईं ओर 'वसुमती-सहिताय पं पद्म-निधये नमः श्री पादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः' मन्त्रों से पूजन-तर्पण करे। इन दोनों का ध्यान निम्न प्रकार करे–

मुक्ता-माणिक्य-सङ्काशौ, किञ्चित्-स्मित-मुखाम्बुजौ।
अन्योन्यालिङ्गन - परौ, शङ्ख - पङ्कज - धारिणौ।।
विलसद्-रत्न-वर्णाभ्यां, शङ्खाभ्यां परि - लाञ्छितौ।
तुन्दिलं कम्बुक - निधिं वसु-धारां घन-स्तनीम्।।
वामतः पङ्कज - निधिं, प्रियया सहितं यजेत्।
सिन्दूराभौ भुजाश्लिष्टौ, रक्त - पद्मोत्पलान्वितौ।।
निः-सरद्-रत्न-धाराभ्यां, मूर्धिन-सिन्दूर-लाञ्छितौ।।

अन्त में पूर्व-वत् गन्धोदक और पुष्पाञ्जलि निम्न मन्त्रों से अर्पित करे–

एताः अष्ट-दल-कमल-मध्यस्थाः सङ्कर्षणादयः स-मुद्राः सायुधाः स-शक्तयः स-वाहनाः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमहा-लक्ष्मि!
अभीष्ट - सिद्धिं मे देहि, शरणागत - वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम्।।

(३) योनि-मुद्रा से प्रणाम कर अष्ट-दलों के अग्र-भाग में पूर्वादि-क्रम से वामावर्त से ही पूर्व-वत् पूजन-तर्पण करे। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं बलाक्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं विमलायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं कमलायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नव-मालिकायै नमः श्रीपादुकां

पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं शाङ्कर्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं वसु-मालिकायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

तब विमलादि का ध्यान निम्न प्रकार करे–

पङ्कज - द्वय - धारिण्यो, मुक्ता-हार-सम-प्रभाः।
वराभय-समायुक्ताः, स्मित-वक्त्रा सु - भूषणाः।।

अन्त में पूर्व-वत् गन्धोदक और पुष्पाञ्जलि निम्न मन्त्रों से प्रदान करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमहा-लक्ष्मि!
अभीष्ट - सिद्धिं मे देहि, शरणागत - वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, तृतीयावरणार्चनम्।।

(४) योनि-मुद्रा से प्रणाम कर भूपुर में इन्द्रादि का पूजन-तर्पण उनकी अपनी दिशाओं में पूर्व-वत् करे। पहले 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं भूपुराय नमः' से पुष्पाञ्जलि दे। फिर इन्द्रादि का पूजन-तर्पण करे। यथा–

पूर्वे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं लं इन्द्राय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। आग्नेये-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं रं अग्नये नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। दक्षिणे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं मं यमाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। नैऋते-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं क्षं नैऋतये नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। पश्चिमे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं वं वरुणाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। वायौ-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं यं वायवे नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। उत्तरे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सं सोमाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ईशाने-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं इं ईशानाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ईशान-पूर्वयोर्मध्ये-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं आं ब्रह्मणे नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। निऋति-वरुणयोर्मध्ये-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं ह्रीं अनन्ताय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

पूर्व-वत् गन्धोदक और पुष्पाञ्जलि निम्न मन्त्रों से प्रदान करे–

एताः भूपुरस्थ-देवताः इन्द्रादयः स-मुद्राः सायुधाः स-शक्तिकाः स-परिवाराः स-वाहनाः सालङ्काराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमहा-लक्ष्मि!
अभीष्ट - सिद्धिं मे देहि, शरणागत - वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, चतुर्थावरणार्चनम्।।

(५) भूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि के समीप वज्रादि अस्त्रों का पूजन-तर्पण करे। पहले 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-यन्त्र-पीठाय नमः' से पुष्पाञ्जलि दे। फिर 'अस्त्रादि' का पूजन-तर्पण करे। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं वं वज्राय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं शं शक्तये नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं दं दण्डाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं खं खड्गाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं पां पाशाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अं अंकुशाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं गं गदायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं त्रिं त्रिशूलाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं पं पद्माय नमः श्रींपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं चं चक्राय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

पूर्व-वत् गन्धोदक और पुष्पाञ्जलि निम्न मन्त्रों से प्रदान करे–

एताः वज्रादयः स-शक्तिकाः सालङ्काराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमहा-लक्ष्मि!

अभीष्ट - सिद्धिं मे देहि, शरणागत - वत्सले!

भक्त्या समर्पये तुभ्यं, पञ्चमावरणार्चनम्।।

इस प्रकार आवरण-पूजन कर श्रीचक्र के ईशानादि निम्न निर्दिष्ट स्थानों में निम्न मन्त्रों से पूर्व-वत् पूजन-तर्पण करे–

ईशाने-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं वं वटुकाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

आग्नेये-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं यों योगिनीभ्यो नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

नैऋते-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं क्षें क्षेत्र-पालाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

वायव्ये-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं गं गणपतये नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

मध्ये विन्दु-समीपे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं क्लीं देवी-पुत्राय काम-देवाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं क्लीं देवी-पुत्रेभ्यः नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं उलूक-वाहनाय स-शक्तिकाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

फिर मूल-मन्त्र से महा-लक्ष्मी का एक सहस्त्र या कम-से-कम तीन बार गन्धादि से पूजन कर तर्पण करे और निम्न मन्त्रों से पूर्व-वत् पूजन-तर्पण करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सूर्यादि-ग्रहेभ्यः नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं भूपुर-समीपे देवी-पुरतः अष्ट-वसुभ्यः नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं द्वादशादित्येभ्यः नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं एकादश-रुद्रेभ्यः नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अश्विभ्यां नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः।

तब मूल-मन्त्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि देकर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, महा-नैवेद्य पूर्व-वत् प्रदान करे और भगवती को नैवेद्य ग्रहण किए हुई ध्यान कर दस बार मूल-मन्त्र का जप करे। जप समर्पित कर हवन करे।

होम

श्रीचक्र के ईशान कोण में अन्य आसन पर पूर्व-मुख होकर बैठे और अन्य पात्र में गन्ध, पुष्पाक्षत, सामान्यार्घ्य-जल लेकर स्थण्डिल या ताम्रादि-पात्र में अग्नि स्थापित करे।

कुश से काष्ठादि शकल का मार्जन करे। भूमि को गो-मय और जल से लीप ले। तीन बार मूल-मन्त्र का उच्चारण कर सामग्री को उठाए और स्थापित करे। फिर मूल-मन्त्र से मूल देवता महा-लक्ष्मी-स्वरूपा अग्नि को स्थापित करे। प्रोक्षित समिधा उसमें डाले। तब ऋष्यादि से लेकर ध्यान तक के कर्म कर मूल-मन्त्र से तीन बार अग्नि का सिञ्चन कर मूल-मन्त्र से पञ्चोपचारों द्वारा अग्नि का पूजन करे। फिर तिल, चावल, फल-पुष्पादि-युक्त पायस (खीर) से निम्न मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान करे–

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं वायवे नमः। ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजा-पतये नमः। मूलं महा-लक्ष्म्यै स्वाहा, इदं महा-लक्ष्म्यै नमः।

महा-लक्ष्मी के प्रति २५ आहुतियाँ देकर पुनः 'भूः' आदि से चार आहुतियाँ दे और ३४ आहुतियाँ निम्न मन्त्र से प्रदान करे–

अग्नये स्विष्ट-कृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्ट-कृते नमः।

अब षडङ्ग-न्यास कर निम्न मन्त्र से भगवती महा-लक्ष्मी के चरणों में जल अर्पित करे–

अनेन होमाख्येन कर्मणा महा-लक्ष्मीः प्रीयताम्।

पञ्च-बलि

पुनः पूजा के आसन पर बैठकर श्रीचक्र के ईशान आदि चार कोणों और उत्तर में गन्धोदक से मत्स्य-मुद्रा द्वारा त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्त्र के पाँच मण्डल बनाए। गन्ध-पुष्प से 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं व्यापक-मण्डलाय नमः' से उनका पूजन कर क्रमशः उन मण्डलों का गन्ध, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वटुकाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यां योगिनीभ्यो नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षें क्षेत्रपालाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्व-भूतेभ्यो नमः।

फिर प्रत्येक मण्डल पर आधार-सहित नैवेद्य-युक्त पात्र रखे और निर्दिष्ट मुद्रा से उसे पकड़कर दाएँ हाथ से श्रीपात्र के तीर्थ की धार उस पर छोड़ते हुए बलि निवेदित करे–

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवी-पुत्र वटुक-नाथ! कपिल-जटा-भार-भासुर, त्रिनेत्र, ज्वाला-मुख! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय, सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण, स्वाहा।

इस प्रकार बाँएँ हाथ के अंगुष्ठ-अनामा से बलि देकर पुष्पाञ्जलि निम्न मन्त्र से दे–

बलि - दानेन सन्तुष्टो, बटुकः सर्व - सिद्धिदः।
शान्तिं करोति मे नित्यं, भूत - वेताल - सेवितः।।

तब योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यां योगिनीभ्यः स्वाहा, सर्व-योगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा।

बाँएँ अंगुष्ठ-अनामा-मध्यमा से बलि देकर पुष्पाञ्जलि दे–

या काचिद् योगिनी रौद्रा, सौम्या घोर - तरा परा।
खेचरी भूचरी व्योम - चरी प्रीताऽस्तु मे सदा।।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थान-क्षेत्रपाल! धूप-दीप-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण, सर्वान् कामान् पूरय पूरय स्वाहा।

बाँएँ अंगुष्ठ-तर्जनी से बलि देकर पुष्पाञ्जलि दे–

योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च, क्षेत्रपालस्य किङ्करः।
प्रीतोऽयं बलि - दानेन, सर्व - रक्षां करोति मे।।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर-वरद सर्व-जन मे वशमानय, बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

बाँएँ अंगुष्ठ-मध्यमा से बलि देकर पुष्पाञ्जलि दे–

सर्वदा सर्व - कार्याणि, निर्विघ्नं साधय मम।
शान्तिं करोतु मे नित्यं, विघ्न-राजः स-शक्तिकः।।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सर्व-विघ्न-कृद्भ्यः सर्व-भूतेभ्यो हुं स्वाहा। सर्व-भूतेभ्यः एष बलिर्नमः।

बाँएँ हाथ की पाँचों अँगुलियों से बलि देकर पुष्पाञ्जलि दे–

भूता ये विविधाकारा, दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पाताल - तल - वासी च, शिव-योगेन भावितः।।
क्रूराद्याः शत-संख्यकाः, पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्य - सन्धाश्चापीन्द्राद्याशा-व्यवस्थिताः।।
तृप्यन्तु प्रीत - मनसो; भूत्वा गृह्णन्त्वमं बलिम्।

अन्त में 'सर्व-भूतेभ्यो एष बलि-दानं' कह कर 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाभ्यो बलि-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर नाराच-मुद्रा से निम्न प्रकार प्रार्थना कर उन्हें विसर्जित करे–

बलि - दानेन सन्तुष्टाः, क्षमध्वं बलि - देवताः।
विहरन्तु यथा - सौख्यं, यथेष्टा सु-दिशासु च।।

बटुकाद्याः सुराः सर्वे, सर्व - सिद्धि - विधायिनः।
मे शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्च, सन्तु तत्तत्-प्रसादतः।।

योनि-मुद्रा से उन्हें प्रणाम कर अपने ऊपर सामान्यार्घ्य-जल तीन बार छिड़के। इसी अवसर पर ग्रहादि को या जिनके प्रति इच्छा हो, उन्हें बलि प्रदान करे। उक्त प्रकार होम न कर सके, तो जल या आत्मा में होम करे।

काम-कला-ध्यान

फिर देवता के प्रति 'मध्ये पानीयं' से जल देकर नीराजन कर प्रणाम करे। अब अञ्जलि में पुष्प लेकर मूल-मन्त्र-युक्त श्लोक से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे और अपनी आत्मा को 'काम-कला'-मय ध्यान करे। 'काम-कला-बीज'-'ईं' है। 'मुखं विन्दुना, विन्दु-द्वयेन स्तनौ, स-परार्धेन योनिः'-इस प्रकार 'काम-कला' का ध्यान करे। तब मूल-मन्त्र का जप करते हुए एक बार देवता की प्रदक्षिणा कर मन्त्र-जप का फल देवी के बाँएँ हाथ में अर्पित कर कवच, हृदय, शत-नाम, सहस्र-नामादि स्तवों से स्तुति करे।

सुवासिनी-पूजन

पूर्व-निमन्त्रित षोडश से तीस वर्ष की आयुवाली सुवासिनी या स्व-पत्नी को, जो स्नान किए हो और वस्त्राभूषणों से अलंकृत प्रसन्न-मुखी हो, बुलाकर उनके पैर धोकर आसन पर बैठाए। 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं महा-लक्ष्म्यै नमः' मन्त्र से उन्हें पाद्यार्घ्याचमनीय, गन्ध, पुष्प, धूप, पट्ट-वस्त्राभूषण देकर उनके दोनों हाथ सामान्यार्घ्य-जल से धुलवाकर गन्धादि से सुगन्धित कर उनके साथ मूल-मन्त्र द्वारा श्रीचक्र के ऊपर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर उनके हाथ में चर्वण-सहित अमृत-पात्र दे। वे सुवासिनी भी गुरु-तर्पण कर मुद्रा-पूर्वक पात्र को उठाकर उसे पान करें और तीन पात्र ग्रहण करने के बाद चौथे पात्र में कुछ अमृत वचाते हुए शेष अमृत को कृपा-पूर्वक साधक को निम्न-मन्त्र पढ़ते हुए प्रदान करें-

वत्स! तुभ्यं प्रयच्छामि, पीत - शेषं कुलामृतम्।
तव शत्रून् हनिष्यामि, तवाभीष्टं ददाम्यहम्।।

साधक उस परमामृत को भक्ति से लेकर स्वात्माग्नि में हवन करे। तब नैवेद्य, फल, ताम्बूलादि भक्ति-पूर्वक सुवासिनी को देकर उन्हें सन्तुष्ट कर विदा करे और भगवती से प्रार्थना करे कि-

'श्री पर-देवता मे प्रसन्नाऽस्तु।'

गुरु-देव यदि उपस्थित हों, तो पादुका-मन्त्र से उनका पूजन कर उन्हें पात्र प्रदान करे। तब सामयिकों (उपस्थित साधकों) के साथ हाथ धोकर गन्धादि से सुगन्धित कर श्रीचक्र को पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। साधक-गण यथा-विधि अपने-अपने अधिकारानुसार तत्त्व-शोधन कर, नैवेद्य लें।

विसर्जन

भगवती महा-लक्ष्मी से '**क्षमस्व**' कह सामान्यार्घ्य-जल निम्न मन्त्र से अर्पित करे–

ॐ इतः पूर्वं प्राण-देह-धर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु कर्मणा वाचा मनसा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यदुक्तं यत्-स्मृतं तत् सर्वं श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः समर्पयामि, मां मदीयं च सकलं श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।

पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए सामान्यार्घ्य-जल अर्पित करे–

साधु वाऽसाधु वा कर्म, यद्यदाचरितं मया।
तत् - सर्वं कृपया देवि!, गृहाणाराधनं मम।।

तब शङ्ख-पात्र को उठाकर देवी के ऊपर तीन बार घुमाकर उसके जल से सामग्रिकों पर प्रोक्षण करे। फिर '**शान्ति-स्तोत्र**' या एक श्लोक-मात्र पढ़े–

शिवाद्यवनि - पर्यन्तं, ब्रह्मादि - स्तम्ब-संयुतम्।
कालाग्न्यादि-शिवान्तं च, जगद्-यज्ञेन तृप्यतु।।

फिर विशेषार्घ्य के द्रव्य को अन्य पात्र में लेकर '**मूलं महा-लक्ष्म्यै स्वाहा**' से स्वात्माग्नि में आहुति देकर शेष द्रव्य को अपने प्रिय शिष्य को दे।

उच्छिष्ट-बलि

श्री देवता के उच्छिष्ट को लेकर पूर्व-वत् मण्डलादि कर निम्न मन्त्र से बलि प्रदान करे–

ॐ ऐं नमः उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गि! सर्व-जन-वशङ्करि! स्वाहा।

फिर पूर्व-दत्त पञ्च-बलियों सहित इस बलि को ले जाकर द्वार-देश में शुद्ध भूमि पर '**उच्छिष्ट-भैरवाय स्वाहा**' मन्त्र से छोड़ दे। तब हाथ-पैर धोकर '**उदयोऽस्तु**' कहता हुआ याग-मण्डप में अपने आसन पर बैठकर निम्न मन्त्र से तीन बार सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे–

ॐ ह्रां ह्रीं सः मार्तण्ड-भैरवाय इदमर्घ्यं स्वाहा।

अन्त में मूल-मन्त्र से अपने शिर पर निर्माल्य धारण कर याग-भूमि को स्वच्छ कर नैवेद्य ग्रहण कर सुख-पूर्वक विहार करे। उक्त विस्तृत पूजन करने में असमर्थ हो, तो '**पुरुष-सूक्त**' या '**श्री-सूक्त**' से देवी की पूजा कर, जप कर, जप-फल निवेदित कर प्रसाद लेकर आनन्द-मय हो विहार करे।

***

श्रीमहा-लक्ष्म्यष्टक-स्तवः

।।इन्द्र उवाच।।

नमस्तेऽस्तु महा - माये, श्री - पीठे सुर - पूजिते!
शङ्ख-चक्र-गदा-हस्ते, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।१
नमस्ते गरुडारूढे, कोलासुर - भयङ्करि!
सर्व-पाप-हरे देवि!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।२
सर्वज्ञे सर्व - वरदे, सर्व - दुष्ट - भयङ्करि!
सर्व-दुःख-हरे देवि!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।३
सिद्धि - बुद्धि - प्रदे देवि!, भुक्ति - मुक्ति - प्रदायिनि!
मन्त्र-मूर्ते सदा देवि!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।४
आद्यन्त - रहिते देवि!, आद्य - शक्ति महेश्वरि!
योगजे योग-सम्भूते!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।५
स्थूल - सूक्ष्म - महा - रौद्रे, महा - शक्ति महोदरे!
महा-पाप-हरे देवि!, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।६
पद्मासन - स्थिते देवि!, पर - ब्रह्म - स्वरूपिणि!
परमेशि जगन्मातः, महा - लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।७
श्वेताम्बर - धरे देवि!, नानालङ्कार - भूषिते!
जगत्-स्थिते जगन्मातः, महा-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।८

।।फल-श्रुति।।

महा - लक्ष्म्यष्टक - स्तोत्रं, यः पठेद् भक्तिमान्नरः।
सर्व - सिद्धिमवाप्नोति, राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।।१
एक - कालं पठेन्नित्यं, महा - पाप - विनाशनम्।
द्वि-कालं यः पठेन्नित्यं, धन-धान्य-समन्वितः।।२
त्रि - कालं यः पठेन्नित्यं, महा - शत्रु - विनाशनम्।
महा - लक्ष्मीर्भवेन्नित्यं, प्रसन्ना वरदा शुभा।।३

।।इन्द्र-कृतः श्रीमहा-लक्ष्म्यष्टक-स्तवः।।

***

दरिद्रता-नाशक सूक्त

(ऋग्-वेद)

अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे।
शिरिन्विठस्य सत्त्वभिस्तेऽभिष्ट्वा चातयामसि।।१

हे दरिद्रते! तुम दान-विरोधिनी, कु-शब्दवाली, विकट आकारवाली और क्रोधिनी हो। मैं (शिरिन्विठ) ऐसा उपाय करता हूँ, जिससे तुम्हें दूर करूँगा।

***

चत्तो इतश्चत्तामुतः सर्वा भ्रणान्यारुषी।
अराय्यं ब्रह्मणस्पते! तीक्ष्ण - शृङ्गोदषन्निहि।।२

दरिद्रता वृक्ष, लता, शस्य आदि का अंकुर नष्ट करके दुर्भिक्ष ले आती है। उसे मैं इस लोक और उस लोक से दूर करता हूँ। हे तेजः-शाली ब्रह्मणस्पति! दान-द्रोहिणी इस दरिद्रता को यहाँ से दूर कर आओ।

***

अदो यद्दारु प्लवते, सिन्धो पारे अपूरुषम्।
तदा रभस्व दुर्हणो, तेन गच्छ परस्तरम्।।३

यह जो काठ समुद्र-तट के पास बहता है, उसका कोई कर्त्ता (स्वामी) नहीं है। काठ आकृतिवाली अलक्ष्मी (दरिद्रता)! इसी के ऊपर चढ़कर समुद्र के दूसरे पार चली जाओ।

***

यद्ध प्राचीर - जगन्तोरो मण्डूर - धाणिकीः।
हत इन्द्रस्य शत्रवः, सर्वे बुद् - बुदयाशवः।।४

हिंसा-मयी और कुत्सित शब्दवाली अलक्ष्मियों! जिस समय तत्पर होकर तुम लोग शीघ्र गमन से चली गईं, उस समय इन्द्र (देव) के सब शत्रु जल-बुद्बुद् के समान विलीन हो गए।

***

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान द्वारा प्रचारित उपयोगी प्रकाशन

भगवती शतक	५)	शत-चण्डी-विधान	२५)
भक्ति-योग	५)	शिव-शक्ति-अङ्क	५०)
भगवती मानस-पूजा-स्तोत्र	१०)	श्रीचक्र-रहस्य	२०)
भागवत धर्म का प्राचीन इतिहास	१५)	श्रीविद्या-स्तोत्र पञ्चकम्	३५)
भैरवी-चक्र-पूजन	६)	श्रीविद्या-सपर्या-वासना	१००)
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प-१, २	७०)	श्रीत्रिपुरा महोपनिषद्	६)
मन्त्र-सिद्धि का उपाय	६)	श्री विद्या-साधना (५ पुष्प)	२००)
मन्त्र-कोष	३००)	सप्तशती तत्त्व	३०)
मन्त्रात्मक-सप्तशती (सजिल्द)	५००)	सम्पादक के संस्मरण	५०)
महा-विद्या स्तोत्र	१०)	साधक का संवाद	२५)
महा-गणपति साधना	३५)	सौन्दर्य-लहरी	१५)
मुद्राएँ एवं उपचार (सचित्र)	२५)	सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०)
महा-शक्ति-पीठ विन्ध्याचल	२०)	सार्थ सौन्दर्य-लहरी	८०)
मन्त्र-योग	५)	सप्त-दिवसीय सप्तशती-पाठ	३५)
रमा-परायण	३५)	सम्पुटित सप्तशती	४५)
राम अङ्क	१०)	सविधि श्रीरुद्र-चण्डी	१०)
राज-योग	५)	सांख्यायन तन्त्र (हिन्दी सारांश सहित)	१००)
रास-लीला-विज्ञान	१०)	साधना-रहस्य	५०)
ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा	२५)	सार्थ चण्डी (श्री दुर्गा सप्तशती)	२५०)
ललिता-सप्तशती	४५)	स्वर-विज्ञान	७५)
लेख-संग्रह-स्वामी दिव्यानन्द जी	५)	हवनात्मक सप्तशती	१००)
लघु चण्डी	१५)	हठ-योग	५)
वन्दे मातरम्	५)	हिन्दी कुलार्णव तन्त्र	१००)
वैदिक देवी-पूजा पद्धति	५)	हिन्दी कौलावली-निर्णय	२५)
वाम-मार्ग	(यन्त्रस्थ)	हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र	१५०)
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा-सप्तशती)	२५)	हिन्दी शाक्तानन्द-तरङ्गिणी	१५)
विज्ञान-योग	५)	हिन्दुओं की पोथी	२५)
शाबर-मन्त्र-संग्रह (बारह भाग)	३८५)	होलिका-महिमा एवं पूजन-विधि	५)
शाक्त धर्म क्या है?	१५)	होमेज टू एनसेस्टर्स (पितृ-पूजा)	२०)
		आगमोक्त योग-साधना (अंग्रेजी में)	५)

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६ फोन: ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७

रजि० सं० ३२९८१/५७

'तन्त्र-शास्त्र' -विषयक दो महत्त्व-पूर्ण पुस्तकें

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त जी शुक्ल

द्वारा सम्पादित एवं हिन्दी-रूपान्तरण

१. हिन्दी कुलार्णव तन्त्र

२. हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र

के

सजिल्द नवीन संस्करण हेतु

सम्पर्क करें-

'श्रीचण्डी-धाम', कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२) २५०२७८३, ०९४५०२२२७६७

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२७६७